सुर तरंगिणी

- माँ जाह्नवी

अनुवादक एवं लेखक:
सुरेश चौधरी “इंदु”

ISBN : 978-81-948093-4-0

सुर तरींगिणी माँ जाह्नवी
प्रकाशक
शुक्तिका प्रकाशन
स्वामित्व:
ए & ए इंटरपराईजेज
143 d सरद बोस रोड, कोलकाता 700026
प्रबंध कार्यालय :
516/4 बी एल साहा रोड , ग्राउन्ड फ्लोर, कोलकाता 700038
मो: 94324 19815
ई मेल: enterprisesaa2019@gmail.com

लेखक : सुरेश चौधरी ‘इंदु’
(लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक का किसी भी अंश का संक्षिप्त या परिवर्तित करके उद्धृत करना कॉपी राइट का उल्लंघन होगा)

मूल्य: 180/-

संस्करण : प्रथम 2021

मुद्रक:

SURTARANGINI MAA JAHNVEE- TRANSLATED METERED POETRY OF VARIOUS SANSKRIT SHLOK ON GANGA – A BOOK BY SURESH CHOOUDHARY ‘INDU’

अनुक्रमिका

आत्म-कथ्य 2
गंगा वंदना 3
गंगा एक झलक 4
गंगा विवरण और जानकारी 9
गंगावतरण : 16
संध्या गंगा दर्शन की 23
गंगा स्तोत्र आदि शंकर 24
गंगा लहरी – प. जग्गनाथ 28
गंगा -कुम्भ दर्शन 64
अष्टकम् :
-आदिशंकर 66
-कालिदास 71
-बाल्मीकि 74

आलेख : गंगा का जल खराब क्यों नही होता 78
आलेख : जाह्नवी नाम क्यों पड़ा 81
आलेख : पतित पावनी गंगा 87
आलेख : गंगा जैसी माँ कहाँ 91

आत्म-कथ्य

सुधि पाठक जन

सादर नमन ,

अनुवाद की शृंखला मे यह मेरी दसवीं पुस्तक है, इसके पूर्व, श्रीदुर्गा सप्तशती, 9 उपनिषद, महादेव जी की अनेकों स्तुतियाँ एवं शिव महिम्न, आदिशंकर के कार्यो का अनुवाद, गोपी गीत का अनुवाद, सुभाषित श्लोकों का अनुवाद, भागवत के 101 श्लोकों का अनुवाद एवं वेदों के सूक्तों का अनुवाद किया है| प्रायः सभी अनुवाद विभिन्न छंदों में ही हुए हैं |

प्रस्तुत पुस्तक मे माँ गंगा जिसे सुर तरंगिणी भजी कहते हैं के बारे मे विस्तृत जानकारी दी है मैंने |

हमारे वेद जब कहे गए तब लिपि तक का आविष्कार नहीं हुआ था, इनका लेखन हजारों वर्ष बाद हुआ | लेखन होते होते कई अशुद्धियाँ भी प्रक्षेपित हो गई, कालांतर मे वेदों के दुरूह मंत्रों को समझने के लिए साधु संतों ने वेदों के भाव को लेकर कथाएं रची वे कथाएं पुराणों मे वर्णित हैं, अगर हम उन कथाओं के मूल सार को समझे तो हमे वैदिक सूत्र को समझना सरल हो जाएगा, इस क्रम मे कई ऐसी कथाएं भी गढ़ ली गई जिनका हमारी संस्कृति से मेल नहीं है, और कई अंधविश्वासी तत्व उससे अपना स्वयं सिद्ध करने लगे, आज समे की आवश्यकता है हम उन पौराणिक कथाओं को डिकोड करें और उसे जनमानस तक पहुंचाएं की वास्तव मे क्या हुआ होगा और उस कथा का उद्देश्य क्या है | ऐसा ही एक छोटा सा प्रयास मैंने इस पुस्तक मे गंगावतरण की पौराणिक कथा के आधार पर किया है | आशा है पाठक इस प्रयास को अंधविश्वास से न जोड़ कर आस्था को प्रस्थापित करते हुए साकारात्मक रूप से ग्रहण करेंगे |

वस्तुतः इस पुस्तक के लिखने का सम्पूर्ण श्रेय परम आदरणीय गुरुजी बालव्यास प. श्रीकांत शर्मा जी को जाता है, उन्होंने एक कथा प. जगन्नाथ मिश्र की भेजी थी जिसे इस पुस्तक मे भी उद्धृत किया गया है जैसे रूप मे मिली ठीक वैसे ही रूप मे। कथा पढ़ने के बाद मन मे विचार आया कि क्या इसका अनुवाद नहीं हो सकता? अगर हो जाए तो जन जन को कितना लाभ पहुंचे, यह सोच कर प्रथम तीन प्रकार के छंदों मे अनुवाद का प्रयास किया, दोहों मे, लावणी मे, और हरगीतका मे, अंततः हरगीतिक मे अनुवाद करने का प्रयास किया है, यह प्रयास सफल हुआ कि नहीं यह आपकी प्रतिक्रिया बताएगी | बाकी कई श्लोकन के अनुवाद पहले के किए हुए थे उन्हे इसमे संमलित किया गया है |

आशा है कुल मिला कर माँ भागीरथी के चरणों मे मेरा यह प्रयास समर्पित है |

आपका

सुरेश चौधरी 'इंदु'

गंगा दशहरा संवत 2078

बालव्यास श्री कान्त शर्मा – भागवताचार्य

कोलकाता

"सुरतरिंगिणी माँ जान्हवी"

-समीक्षा

पिछले कई सालों से "सुरेश चौधरी-इंदु " के संस्कृत के दिव्य भावों को लोक कल्याण हेतु भाषा बद्ध करके सार्वदेशिक भावों से भर दिया है |

सहज-सरल शब्द शैली के पाथेय को परोसते- बौद्धिक आध्यात्मिक सामाजिक , सांस्कृतिक इनके विचार सराहनीय हैं|

अभी आप द्वारा अनुवादित " सुर तरिंगिणी माँ जान्हवी" मेरे पास आपने भेजी |

आदि जगतगुरु शंकराचार्य जी द्वारा " श्री गंगा स्तोत्र" पढ़ कर मन कृत्य-कृत्य हो गया| हम नित्य पाठ तो करते हैं, पर लावणी छंद मे पाठ करके आनंद आ गया:

"गंगा वारी हे मनोहारी विष्णु चरण से निकल पड़ी" देवि सुरेश्वरी भगवती गंगे- पावन माँ भगवती तरंगा ने क्या वैभवदायी भाव भर दिए हैं |

दूसरी " गंगा लहरी" का तो कहना ही क्या है, 52 श्लोक हैं, जब विष्णु पादाब्ज़भूता त्रिपथ गामिनी के किनारे खड़े होकर प. श्री जगन्नाथ मिश्र जी को निज अंक मे समा के ले गई , गंगा माँ |

जिस गंगा-लहरी का एक एक श्लोक भारतीय विद्वदजनों के मन मे समाहित है| सुरेश जी ने अनुवाद करके तो " समृद्धं सौभाग्यम " शब्द को चरितार्थ कर दिया |

" सौभाग्य से सम्पूर्ण श्रुति के तत्व सुमन अपार की " हरगीतिका छंद मे रस प्रवाहित कर दिया |

राजऋषि के वक्ष कस्तूरी – ये महिमा प्रणम्य है |

आपका अनुवाद – इस तुमुल कोलाहल -कलह युक्त कलियुग मे -कामायनी के शब्दों मे :

" तपन मे शीतल मंद बयार "

संस्कृत शिक्षा को समयानुकूल प्रगाढ़ अनुराग से भर देते हैं | आप एक निष्काम योगी की तरह अनेक ग्रंथों की सेवा मे लगे हैं| सुयश आपका बढ़ता रहे |

-बालव्यास श्रीकांत शर्मा
भागवताचार्य – कोलकाता

गंगा वंदना
तुलसीदास रचित

जय जय भागीरथ नंदिनी, मुनि-चय चकोर-चंदिनी
नर-नाग-बिबुध-बंदिनी-जय जह्नु बालिका
विष्णुपद सरोजजासी ईस-सीस पर बिभासि,
त्रिपथगासि पुण्यराशि पापछालिका |1|

बिमल बिपुल बहसि बारि, सीतल त्रयताप हारि
भंवर बर बिभंगतर तरंग-मालिका
पुरजन पूजोपहार शोभित शशि धवलदार,
भंजन भव भार भक्ति कल्पथालिका |2|

निज तट बासि बिहंग, जल-थर-चर पसु-पतंग
कीट, जटित तापस सब सरिस पालिका|
तुलसी तव तीर तीर सुमरित रघुबंस-बीर
बिचरत मति देहि मोह- महिष-कालिका|3|

गंगा एक झलक :

देश: भारत, बांग्लादेश
उपनदियाँ : - बाएँ - महाकाली, करनाली, कोसी, गंडक, सरयू
दाएँ -यमुना, सोन नदी, महानंदा
स्रोत : गंगोत्री हिमनद
स्थान: उत्तराखण्ड, भारत
ऊँचाई 3,892 मी. (12,769 फीट)
निर्देशांक 30°59′N 78°55′E
मुहाना सुंदरवन
- स्थान : बंगाल की खाड़ी, बांग्लादेश
- ऊँचाई 0 मी. (0 फीट)
- निर्देशांक 22°05′N 90°50′E
लंबाई 2,525 कि.मी. (1,569 मील)
जलसम्भर 9,07,000 कि.मी.^{2} (3,50,195 वर्ग मील)
प्रवाह औसत 12,015 मी.^{3}/से. (4,24,306 घन फीट/से.)

- भारत में सबसे बड़ा जल ग्रहण क्षेत्र गंगा नदी का है|
- गंगा नदी का निर्माण उत्तराखण्ड में दो नदियों की संयुक्त धाराओं के मिलने से होता है| ये दो धारायें हैं – भागीरथी नदी और अलकनंदा नदी|
- भागीरथी नदी उत्तराखण्ड में उत्तरकाशी जिले में गोमुख के निकट गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है और अलकनंदा नदी सतोपथ ग्लेशियर से निकलती है|
- भागीरथी और अलकनंदा नदियां देव प्रयाग में मिलकर गंगा नदी का निर्माण करती हैं|
- अलकनंदा नदी –अलकनंदा नदी का निर्माण दो नदियों के संयुक्त धाराओं के मिलने से होता है – धौली गंगा नदी और विष्णु गंगा नदी|
- विष्णु प्रयाग से आगे कर्ण प्रयाग में पिण्डार नदी अलकनंदा नदी से आकर मिल जाती है|
- रूद्र प्रयाग में अलकनंदा नदी से मन्दाकिनी नदी आकर मिलती है|
- रूद्र प्रयाग से आगे देव प्रयाग में अलकनंदा नदी से भागीरथी नदी आकर मिलती है|
- भागीरथी नदी और अलकनंदा नदी की संयुक्त धारा गंगा नदी कहलाती है|
- गंगा नदी भारत में 5 राज्यों से होकर गुजरती है – उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल|
- गंगा नदी की सबसे ज्यादा लम्बाई उत्तर प्रदेश में है तथा सबसे कम लम्बाई झारखंड राज्य में है|
- गंगा नदी सर्वप्रथम हरिद्वार में पर्वतीय भाग से निकलकर मैदान में प्रवेश करती है|
- पश्चिम बंगाल में गंगा नदी दो वितरिकाओं में बंट जाती है – भागीरथी एवं हुगली| मुख्य नदी भागीरथी अर्थात् गंगा बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और हुगली नदी पश्चिम बंगाल में दक्षिण की ओर बहते हुए बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है|
- पश्चिम बंगाल में गंगा नदी को भागीरथी नदी भी कहते हैं|

- कोलकाता हुगली नदी के ही तट पर स्थित है|
- छोटा नागपुर पठार के बीचों-बीच भ्रंश घाटी में बहने वाली दामोदर नदी पूरब दिशा की ओर प्रवाहित होते हुए हुगली नदी में मिल जाती है|
- गंगा नदीकी मुख्य धारा भागीरथी नदी अथवा गंगा नदी बांग्लादेश में पहुँचकर पद्मा नदी के नाम से जानी जाती है|
- ब्रह्मपुत्र नदी से मिलने के बाद गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नदी की संयुक्त धारा ही पद्मा नदी कहलाती है| आगे चलकर पद्मा नदी से मेघना नदी अथवा बराक नदी मिलती है, तो इन दोनों नदियों की मुख्य धारा मेघना नदी ही कहलाती है| अर्थात् मेघना नदी ही बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है|
- बराक नदी अथवा मेघना नदी 'मणिपुर' से निकलती है|
- बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र नदी को जमुना नदी कहते हैं, अर्थात् पद्मा नदी और जमुना नदी की मुख्य धारा पद्मा नदी कहलाती है|
- गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नदी का डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है| गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नदी के डेल्टा को सुन्दरवन का डेल्टा भी कहते हैं|
- सुन्दरवन के डेल्टा पर सुन्दरी नामक वृक्ष की बहुलता होने के कारण इसे सुन्दरवन का डेल्टा कहते हैं|
- सुन्दरवन डेल्टा का विस्तार हुगली नदी से लेकर मेघना नदी तक है|
- सुन्दरवन का डेल्टा मैंग्रोव वनों के लिए जाना जाता है| यहाँ पर मुख्य रूप से मैंग्रोव, कैसुरीना और सुन्दरी नामक वृक्ष पाये जाते हैं|
- मैंग्रोव वनों कि वनस्पतियों की लकड़ियाँ बहुत कठोर होती हैं और उनकी छाल नमकीन होती है, क्योंकि इन वनस्पतियों की जड़े डेल्टा क्षेत्र में समुद्र के जल में डूबी हुई होती हैं|
- भारत में बंगाल टाइगर मैंग्रोव वनों के क्षेत्र के अंतर्गत ही पाए जाते हैं, अर्थात् बंगाल टाइगर सुन्दरवन डेल्टा में पाए जाते हैं|
- भारत में पश्चिम बंगाल में मैंग्रोव वनों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है| उसके बाद गुजरात दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदीऔर कृष्णा नदी के डेल्टा में मैंग्रोव वनों का क्षेत्रफल सर्वाधिक है|
- गंगा नदी की सहायक नदियों को सुविधा की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है – (1) गंगा नदी के दाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां (2) गंगा नदी के बाँए तट पर आकर मिलने वाली नदियां
- गंगा नदी के दाहिने तट पर आकर मिलने वाली नदियां :- मुख्य रूप से यमुना, चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन, टोन्स और सोन
- गंगा नदी की एकमात्र हिमालयी सहायक नदी यमुना नदी है, जो कि इसके दाँए तट पर आकर मिलती है|
- चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन :-यद्यपि चम्बल, सिन्ध, बेतवा और केन नदियां गंगा नदी तंत्र का हिस्सा है, लेकिन ये चारों नदियां अपना जल सीधे गंगा नदी में न गिराकर यमुना नदी में गिराती हैं|
- चम्बल नदी, यमुना नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है| चम्बल, सिन्ध, बेतवा और केन ये चारों नदियां प्रायद्वीपीय पठार के अंतर्गत मालवा के पठार से निकलती हैं|
- टोंस और सोन :-टोंस और सोन ये दोनों नदियां भी प्रायद्वीपीय पठार से निकलकर सीधे गंगा नदी में अपना जल गिराती हैं|
- टोंस नदी प्रयागराज (इलाहाबाद) जिले में गंगा से आकर मिलती है|
- सोन नदी मैकाल पहाड़ी के अमरकंटक चोटी से निकलकर पटना के पास गंगा नदी में मिलती है|
- गंगा नदी के बाँए तट पर मिलने वाली नदियां :-यमुना नदी को छोड़कर अन्य सभी हिमालयी नदियां गंगा नदी के बाँए तट पर आकर मिलती हैं, जिनका पश्चिम से पूर्व की ओर क्रम इस प्रकार है –रामगंगा, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी और महानंदा|
- रामगंगा, गोमती और घाघरा नदियांउत्तर प्रदेश में प्रवाहित होती हैं| गण्डक नदी और कोसी नदी बिहार में प्रवाहित होती हैं, जबकि महानन्दा नदीबिहार और पश्चिम बंगाल की सीमा पर प्रवाहित होती हैं|
- गोमती नदी गंगा नदी की एकमात्र सहायक नदी है, जो कि हिमालय से न निकलकर मैदानी क्षेत्र से निकलती है| गोमती नदी का उद्गम उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले में तराई के मैदान में स्थित फुल्हर झील से होता है|
- लखनऊ और जौनपुर शहर गोमती नदी के तट पर ही बसे हैं|
- गण्डक को नेपाल में शालिग्राम या नारायणी नदी भी कहते हैं|
- कोसी नदी नेपाल से निकलकर बिहार राज्य में गंगा नदी से मिलती है| कोसी नदी को बिहार का शोकभी कहते हैं, क्योंकि कोसी नदी अपना रास्ता बदलने के लिए कुख्यात है|
- महानन्दा नदी, गंगा नदी के बाँए तट पर मिलने वाली गंगा नदी की सबसे पूर्वी अथवा अन्तिम सहायक नदी है|
- महानन्दा का उद्गम पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग की पहाड़ियों से होता है|
- क्षिप्रा नदी, चम्बल की सहायक नदी है| उज्जैन, क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है|

<u>गंगा विवरण और जानकारी</u>

विकिपीडिया में गंगा से बारे में विस्तार से बताया गया है, कुछ प्रमुख बातें:-

गंगा (संस्कृत: गङ्गा ; बांग्ला: গঙ্গা ;संथाली: □□□) भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है। यह भारत और बांग्लादेश में कुल मिलाकर 2525 किलोमीटर (कि॰मी॰) की दूरी तय करती हुई उत्तराखंड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुन्दरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है। देश की प्राकृतिक सम्पदा ही नहीं, जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। 2,071 कि॰मी॰ तक भारत तथा उसके बाद बांग्लादेश में अपनी लंबी यात्रा करते हुए यह सहायक नदियों के साथ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण गंगा का यह मैदान अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। 100 फीट (31 मी॰) की अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारत में पवित्र नदी भी मानी जाती है तथा इसकी उपासना माँ तथा देवी के रूप में की जाती है। भारतीय पुराण और साहित्य में अपने सौंदर्य और महत्त्व के कारण बार-बार आदर के साथ वंदित गंगा नदी के प्रति विदेशी साहित्य में भी प्रशंसा और भावुकतापूर्ण वर्णन किये गये हैं।

इस नदी में मछलियों तथा सर्पों की अनेक प्रजातियाँ तो पायी जाती ही हैं, तथा मीठे पानी वाले दुर्लभ डॉलफिन भी पाये जाते हैं। यह कृषि, पर्यटन, साहसिक खेलों तथा उद्योगों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है तथा अपने तट पर बसे शहरों की जलापूर्ति भी करती है। इसके तट पर विकसित धार्मिक स्थल और तीर्थ भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विशेष अंग हैं। इसके ऊपर बने पुल, बांध और नदी परियोजनाएँ भारत की बिजली, पानी और कृषि से सम्बन्धित जरूरतों को पूरा करती हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस नदी के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। गंगा की इस अनुपम शुद्धीकरण क्षमता तथा सामाजिक श्रद्धा के बावजूद इसको प्रदूषित होने से रोका नहीं जा सका है। फिर भी इसके प्रयत्न जारी हैं और सफ़ाई की अनेक परियोजनाओं के

क्रम में नवम्बर,2008 में भारत सरकार द्वारा इसे भारत की राष्ट्रीय नदी तथा प्रयाग (प्रयागराज) और हल्दिया के बीच (1600 किलोमीटर) गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया है।
उद्गम:
गंगा नदी की प्रधान शाखा भागीरथी है जो गढ़वाल में हिमालय के गौमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद(GURUKUL) से निकलती हैं। गंगा के इस उद्गम स्थल की ऊँचाई 3140 मीटर है। यहाँ गंगा जी को समर्पित एक मंदिर है। गंगोत्री तीर्थ, शहर से 19 कि॰मी॰ उत्तर की ओर 3,892 मी॰ (12,770 फीट) की ऊँचाई पर इस हिमनद का मुख है। यह हिमनद 25 कि॰मी॰ लंबा व 4 कि॰मी॰ चौड़ा और लगभग 40 मीटर ऊँचा है। इसी ग्लेशियर से भागीरथी एक छोटे से गुफानुमा मुख पर अवतरित होती हैं। इसका जल स्रोत 5,000 मीटर ऊँचाई पर स्थित एक घाटी है। इस घाटी का मूल पश्चिमी ढलान की संतोपंथ की चोटियों में है। गौमुख के रास्ते में 3,600 मीटर ऊँचे चिरबासा ग्राम से विशाल गौमुख हिमनद के दर्शन होते हैं। इस हिमनद में नन्दा देवी, कामत पर्वत एवं त्रिशूल पर्वत का हिम पिघल कर आता है। यद्यपि गंगा के आकार लेने में अनेक छोटी धाराओं का योगदान है, लेकिन 6 बड़ी और उनकी सहायक 5 छोटी धाराओं का भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व अधिक है। अलकनन्दा (विष्णु गंगा) की सहायक नदी धौली, विष्णु गंगा तथा मन्दाकिनी है। धौली गंगा का अलकनन्दा से विष्णु प्रयाग में संगम होता है। यह 1372 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। फिर 2805 मीटर ऊँचे नन्द प्रयाग में अलकनंदा का नन्दाकिनी नदी से संगम होता है। इसके बाद कर्ण प्रयाग में अलकनंदा का कर्ण गंगा या पिंडर नदी से संगम होता है। फिर ऋषिकेश से 139 कि॰मी॰ दूर स्थित रुद्र प्रयाग में अलकनंदा मन्दाकिनी से मिलती है। इसके बाद भागीरथी व अलकनंदा 1500 फीट पर स्थित देव प्रयाग में संगम करती हैं यहाँ से यह सम्मिलित जल-धारा गंगा नदी के नाम से आगे प्रवाहित होती है। इन पाँच प्रयागों को सम्मिलित रूप से पंच प्रयाग कहा जाता है। इस प्रकार 200 कि॰मी॰ का सँकरा पहाड़ी रास्ता तय करके गंगा नदी ऋषिकेश होते हुए प्रथम बार मैदानों का स्पर्श हरिद्वार में करती हैं।

गंगा का मैदान
हरिद्वार से लगभग 800 कि॰मी॰ मैदानी यात्रा करते हुए Bijnor, गढ़मुक्तेश्वर, सोरों, फर्रुखाबाद, कन्नौज, बिठूर, कानपुर होते हुए गंगा प्रयाग (प्रयागराज) पहुँचती है। यहाँ इसका संगम यमुना नदी से होता है। यह संगम स्थल हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण तीर्थ है। इसे तीर्थराज प्रयाग कहा जाता है। इसके बाद हिंदू धर्म की प्रमुख मोक्षदायिनी नगरी काशी (वाराणसी) में गंगा एक वक्र लेती है, जिससे यहाँ उत्तरवाहिनी कहलाती है। यहाँ से मीरजापुर, पटना, भागलपुर होते हुए पाकुर पहुँचती है। इस बीच इसमें बहुत-सी सहायक नदियाँ, जैसे सोन, गण्डक, सरयू, कोसी आदि मिल जाती हैं। भागलपुर में राजमहल की पहाड़ियों से यह दक्षिणवर्ती होती है। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के गिरिया स्थान के पास गंगा नदी दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है— भागीरथी और पद्मा। भागीरथी नदी गिरिया से दक्षिण की ओर बहने लगती है जबकि पद्मा नदी दक्षिण-पूर्व की ओर बहती फरक्का बैराज (1974 निर्मित) से छनते हुई बंग्ला देश में प्रवेश करती है। यहाँ से गंगा का डेल्टाई भाग शुरू हो जाता है। मुर्शिदाबाद शहर से हुगली शहर तक गंगा का नाम भागीरथी नदी तथा हुगली शहर से मुहाने तक गंगा का नाम हुगली नदी है। गंगा का यह मैदान मूलत: एक भू-अभिनति गर्त है जिसका निर्माण मुख्य रूप से हिमालय पर्वतमाला निर्माण प्रक्रिया के तीसरे चरण में लगभग 3-4 करोड़ वर्ष पहले हुआ था। तब से इसे हिमालय और प्रायद्वीप से निकलने वाली नदियाँ अपने साथ लाये हुए अवसादों से पाट रही हैं। इन मैदानों में जलोढ़ की औसत गहराई 1000 से 2000 मीटर है। इस मैदान में नदी की प्रौढ़ावस्था में बनने वाली अपरदनी और निक्षेपण स्थलाकृतियाँ, जैसे- बालू-रोधिका, विसर्प, गोखुर झीलें और गुम्फित नदियाँ पायी जाती हैं।
गंगा की इस घाटी में एक ऐसी सभ्यता का उद्भव और विकास हुआ जिसका प्राचीन इतिहास अत्यन्त गौरवमयी व वैभवशाली है। जहाँ ज्ञान, धर्म, अध्यात्म व सभ्यता-संस्कृति की ऐसी किरण प्रस्फुटित हुई जिससे न केवल भारत, बल्कि समस्त संसार आलोकित हुआ। पाषाण या प्रस्तर युग का जन्म और विकास यहाँ होने के अनेक साक्ष्य मिले हैं। इसी घाटी में रामायण और महाभारत कालीन युग का उद्भव और विलय हुआ। शतपथ ब्राह्मण, पंचविंश ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मण, ऐतरेय आरण्यक, कौशित की आरण्यक, सांख्यायन आरण्यक, वाजसनेयी संहिता और महाभारत इत्यादि में वर्णित घटनाओं से उत्तर वैदिककालीन गंगा घाटी की जानकारी मिलती है। प्राचीन मगध महाजनपद का उद्भव गंगा घाटी में ही हुआ, जहाँ से गणराज्यों की परंपरा विश्व में पहली बार प्रारंभ हुई। यहीं भारत का वह स्वर्ण युग विकसित हुआ जब मौर्य और गुप्त वंशीय राजाओं ने यहाँ शासन किया।

सुंदरवन डेल्टा
हुगली नदी कोलकाता, हावड़ा होते हुए सुंदरवन के भारतीय भाग में सागर से संगम करती है। पद्मा में ब्रह्मपुत्र से निकली शाखा नदी जमुना नदी एवं मेघना नदी मिलती हैं। अंततः ये 350 कि॰मी॰ चौड़े सुंदरवन डेल्टा में जाकर बंगाल की खाड़ी में सागर संगम करती है। यह डेल्टा गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी नवीन जलोढ़ से 1,000 वर्षों में निर्मित समतल तथा निम्न मैदान है। यहाँ गंगा और बंगाल की खाड़ी के संगम पर एक प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ है जिसे गंगा-सागर-संगम कहते हैं। विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा (सुन्दरवन) बहुत-सी प्रसिद्ध वनस्पतियों और प्रसिद्ध बंगाल टाईगर का निवास स्थान है। यह डेल्टा धीरे-धीरे सागर की ओर बढ़ रहा है। कुछ समय पहले कोलकाता सागर तट पर ही स्थित था और सागर का विस्तार राजमहल तथा सिलहट तक था, परंतु अब यह तट से 15-20 मील (24-32 किलोमीटर) दूर स्थित लगभग 1,80,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। जब डेल्टा का सागर की ओर निरंतर विस्तार होता है तो उसे प्रगतिशील डेल्टा कहते हैं। सुंदरवन डेल्टा में भूमि का ढाल अत्यंत कम होने के कारण यहाँ गंगा अत्यंत धीमी गति से बहती है और अपने साथ लायी गयी मिट्टी को मुहाने पर जमा कर देती है, जिससे डेल्टा का आकार बढ़ता जाता है और नदी की कई धाराएँ तथा उपधाराएँ बन जाती हैं। इस प्रकार बनी हुई गंगा की प्रमुख शाखा नदियाँ जालंगी नदी, इच्छामती नदी, भैरव नदी, विद्याधरी नदी और कालिन्दी नदी हैं। नदियों के वक्र गति से बहने के कारण दक्षिणी भाग में कई धनुषाकार झीलें बन गयी हैं। ढाल उत्तर से दक्षिण है, अतः अधिकांश नदियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। ज्वार के समय इन नदियों में ज्वार का पानी भर जाने के कारण इन्हें ज्वारीय नदियाँ भी कहते हैं। डेल्टा के सुदूर दक्षिणी भाग में समुद्र का खारा पानी पहुँचने का कारण यह भाग नीचा, नमकीन एवं दलदली है तथा यहाँ आसानी से पनपने वाले मैंग्रोव जाति के वनों से भरा पड़ा है। यह डेल्टा चावल की कृषि के लिए अधिक विख्यात है। यहाँ विश्व में सबसे अधिक कच्चे जूट का उत्पादन होता है। कटका अभ्यारण्य सुन्दरवन के उन इलाकों में से है जहाँ का रास्ता छोटी-छोटी नहरों से होकर गुजरता है। यहाँ बड़ी तादाद में सुन्दरी पेड़ मिलते हैं जिसके कारण इन वनों का नाम सुन्दरवन पड़ा है। इसके अलावा यहाँ पर देवा, केवड़ा, तर्मजा, आमलोपी और गोरान वृक्षों की ऐसी प्रजातियाँ हैं, जो सुन्दरवन में पायी जाती हैं। यहाँ के वनों की एक खास बात यह है कि यहाँ वही पेड़ पनपते या बच सकते हैं, जो मीठे और खारे पानी के मिश्रण में रह सकते हों।

जीव-जन्तु
ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि १६वीं तथा १७वीं शताब्दी तक गंगा-यमुना प्रदेश घने वनों से ढका हुआ था। इन वनों में जंगली हाथी, भैंस, गेंडा, शेर, बाघ तथा गवल का शिकार होता था। गंगा का तटवर्ती क्षेत्र अपने शान्त व अनुकूल पर्यावरण के कारण रंग-बिरंगे पक्षियों का संसार अपने आंचल में संजोए हुए है। इसमें मछलियों की १४० प्रजातियाँ, ३५ सरीसृप तथा इसके तट पर ४२ स्तनधारी प्रजातियाँ पायी जाती हैं। यहाँ की उत्कृष्ट पारिस्थितिकी संरचना में कई प्रजाति के वन्य जीवों जैसे— नीलगाय, साम्भर, खरगोश, नेवला, चिंकारा के साथ सरीसृप वर्ग के जीव-जन्तुओं को भी आश्रय मिला हुआ है। इस इलाके में ऐसे कई जीव-जन्तुओं की प्रजातियाँ हैं जो दुर्लभ होने के कारण संरक्षित घोषित की जा चुकी हैं। गंगा के पर्वतीय किनारों पर लंगूर, लाल बंदर, भूरे भालू, लोमड़ी, चीते, बर्फीले चीते, हिरण, भौंकने वाले हिरण, साम्भर, कस्तूरी मृग, सेरो, बरड़ मृग, साही, तहर आदि काफी संख्या में मिलते हैं। विभिन्न रंगों की तितलियाँ तथा कीट भी यहाँ पाये जाते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में धीरे-धीरे वनों का लोप होने लगा है और गंगा की घाटी में सर्वत्र कृषि होती है फिर भी गंगा के मैदानी भाग में हिरण, जंगली सूअर, जंगली बिल्लियाँ, भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी की अनेक प्रजातियाँ काफी संख्या में पाये जाते हैं। डॉलफिन की दो प्रजातियाँ गंगा में पायी जाती हैं। जिन्हें गंगा डॉलफिन और इरावदी डॉलफिन के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा गंगा में पायी जाने वाले शार्क की वजह से भी गंगा की प्रसिद्धि है, जिसमें बहते हुए पानी में पायी जानेवाली शार्क के कारण विश्व के वैज्ञानिकों की काफी रुचि है। इस नदी और बंगाल की खाड़ी के मिलन स्थल पर बनने वाले मुहाने को सुन्दरवन के नाम से जाना जाता है जो विश्व की बहुत-सी प्रसिद्ध वनस्पतियों और प्रसिद्ध बंगाल बाघ का गृहक्षेत्र है।

आर्थिक महत्व
गंगा अपनी उपत्यकाओं (घाटियों) में भारत और बांग्लादेश के कृषि आधारित अर्थ में भारी सहयोग तो करती ही है, यह अपनी सहायक नदियों सहित बहुत बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई के बारहमासी स्रोत भी हैं। इन क्षेत्रों में उगायी जाने वाली प्रधान उपज में मुख्यतः धान, गन्ना, दाल, तिलहन, आलू एवम् गेहूँ हैं। जो भारत की कृषि आज का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। गंगा के तटीय क्षेत्रों में दलदल तथा झीलों के कारण यहाँ लेग्यूम, मिर्च, सरसो, तिल, गन्ना और जूट की बहुतायत फसल होती है। नदी में मत्स्य उद्योग भी बहुत जोरों पर चलता है। गंगा नदी प्रणाली भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है; इसमें लगभग ३७५ मत्स्य प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। वैज्ञानिकों द्वारा उत्तर प्रदेश व बिहार में १११ मत्स्य प्रजातियों की उपलब्धता बतायी गयी है। फरक्का बांध बन जाने से गंगा नदी में हिल्सा मछली के बीजोत्पादन में सहायता मिली है। गंगा का महत्व पर्यटन पर आधारित आय के कारण भी है। इसके तट पर ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर कई पर्यटन स्थल है

जो राष्ट्रीय आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। गंगा नदी पर रैफ्टिंग के शिविरों का आयोजन किया जाता है। जो साहसिक खेलों और पर्यावरण द्वारा भारत के आर्थिक सहयोग में सहयोग करते हैं। गंगा तट के तीन बड़े शहर हरिद्वार, प्रयागराज एवम् वाराणसी जो तीर्थ स्थलों में विशेष स्थान रखते हैं। इस कारण यहाँ श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या निरन्तर बनी रहती है तथा धार्मिक पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। गर्मी के मौसम में जब पहाड़ों से बर्फ पिघलती है, तब नदी में पानी की मात्रा व बहाव अत्यधिक होता है, इस समय उत्तराखण्ड में ऋषिकेश, बद्रीनाथ मार्ग पर कौडियाला से ऋषिकेश के मध्य रैफ्टिंग, क्याकिंग व कैनोइंग के शिविरों का आयोजन किया जाता है, जो साहसिक खेलों के शौकीनों व पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करके भारत के आर्थिक सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

धार्मिक महत्त्व

भारत की अनेक धार्मिक अवधारणाओं में गंगा नदी को देवी के रूप में निरुपित किया गया है। बहुत से पवित्र तीर्थस्थल गंगा नदी के किनारे पर बसे हुए हैं, जिनमें वाराणसी, हरिद्वार और प्रयागराज उत्तरकाशी प्रमुख हैं। गंगा नदी को भारत की नदियों में सबसे पवित्र माना जाता है एवं यह मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सारे पापों का नाश हो जाता है। मरने के बाद लोग गंगा में राख विसर्जित करना मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक समझते हैं, यहाँ तक कि कुछ लोग गंगा के किनारे ही प्राण विसर्जन या अंतिम संस्कार की इच्छा भी रखते हैं। इसके घाटों पर लोग पूजा अर्चना करते हैं और ध्यान लगाते हैं। गंगाजल को पवित्र समझा जाता है तथा समस्त संस्कारों में उसका होना आवश्यक है। पंचामृत में भी गंगाजल को एक अमृत माना गया है। अनेक पर्वों और उत्सवों का गंगा से सीधा सम्बन्ध है। उदाहरण के लिए मकर संक्रांति, कुम्भ और गंगा दशहरा के समय गंगा में नहाना या केवल दर्शन ही कर लेना बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। इसके तटों पर अनेक प्रसिद्ध मेलों का आयोजन किया जाता है और अनेक प्रसिद्ध मंदिर गंगा के तट पर ही बने हुए हैं। महाभारत के अनुसार मात्र प्रयाग में माघ मास में गंगा-यमुना के संगम पर तीन करोड़ दस हजार तीर्थों का संगम होता है। ये तीर्थ स्थल सम्पूर्ण भारत में सांस्कृतिक एकता स्थापित करते हैं। गंगा को लक्ष्य करके अनेक भक्ति ग्रन्थ लिखे गये हैं। जिनमें श्रीगंगासहस्रनामस्तोत्रम् और आरती सबसे लोकप्रिय हैं। अनेक लोग अपने दैनिक जीवन में श्रद्धा के साथ इनका प्रयोग करते हैं। गंगोत्री तथा अन्य स्थानों पर गंगा के मंदिर और मूर्तियाँ भी स्थापित हैं जिनके दर्शन कर श्रद्धालु स्वयं को कृतार्थ समझते हैं। उत्तराखण्ड के पंच प्रयाग तथा प्रयागराज जो उत्तर प्रदेश में स्थित है गंगा के वे प्रसिद्ध संगम स्थल हैं |

<u>गंगा अवतरण</u>

आलेख और परिकल्पना : सुरेश चौधरी

गंगां वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतं ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु मां ।।
अर्थ : गंगाका जल , जो मनोहारी है, विष्णुके श्रीचरणोंसे जिनका जन्म हुआ है, जो त्रिपुरारीकी शीशपर विराजित हैं, जो पापहारिणी हैं , हे मां तू मुझे शुद्ध कर !

पौराणिक कथा:

गंगा अवतरण की जो कथा हम आज तक पढ़ते आये हैं, सुनते आये हैं वह विभिन्न पुराणों में एवं महाभारत में भी वर्णित है , यह कथा संक्षेप में यह है, :

गंगा नदी को भगीरथ ने स्वर्ग (हिमालय त्रिविष्टप) से धरती पर उतारा था। मान्यता है कि गंगा श्रीहरि विष्णु के चरणों से निकलकर भगवान शिव की जटाओं (शिवालिक की जटानुमा पहाड़ी) में आकर बसी गई थी। पौराणिक गाथाओं के अनुसार भगीरथी नदी गंगा की उस शाखा को कहते हैं, जो गढ़वाल (उत्तरप्रदेश) में गंगोत्री से निकलकर देवप्रयाग में अलकनंदा में मिल जाती है व गंगा का नाम प्राप्त करती है। ब्रह्मा से लगभग 23वीं पीढ़ी बाद और राम से लगभग 14वीं पीढ़ी पूर्व भगीरथ हुए। भगीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था। इससे पहले उनके पूर्वज सगर ने भारत में कई नदी और जलराशियों का निर्माण किया था। उन्हीं के कार्य को भगीरथ ने आगे बढ़ाया। पहले हिमालय के एक क्षेत्र विशेष को देवलोक कहा जाता था। राजा सागर ने खुद को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। इस खबर से देवराज इन्द्र को चिन्ता सताने लगी कि कहीं उनका सिंहासन न छिन जाए। इन्द्र ने यज्ञ के अश्व को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम के एक पेड़ से बाँध दिया। जब सागर को अश्व नहीं मिला तो उसने अपने 60 हजार बेटों को उसकी खोज में भेजा। उन्हें कपिल मुनि के आश्रम में वह अश्व मिला। यह मानकर कि कपिल मुनि ने ही उनके घोड़े को चुराया है, वो पेड़ से घोड़े को छुड़ाते हुए शोर कर रहे थे। उनके शोरगुल से मुनि के ध्यान में बाधा उत्पन्न हो रही थी। और जब उन्हें ता चला कि ये यह सोच रहे हैं कि मैने घोड़ा चुराया है तो वे अत्यन्त क्रोधित हुए। उनकी क्रोधाग्नि वाली एक दृष्टि से ही वे सारे राख के ढेर में तब्दील हो गए।

वे सारे अन्तिम संस्कारों की धार्मिक क्रिया के बिना ही राख में बदल गए थे। इसलिए वे प्रेत के रूप में भटकने लगे। उनके एकमात्र जीवित बचे भाई आयुष्मान ने कपिल मुनि से याचना की वे कोई ऐसा उपाय बताएँ जिससे उनके अन्तिम संस्कार की क्रियाएँ हो सकें ताकि वो प्रेत आत्मा से मुक्ति पाकर स्वर्ग में जगह पा सकें। मुनि ने कहा कि इनकी राख पर से गंगा प्रवाहित करने से इन्हें मुक्ति मिल जाएगी। गंगा को धरती पर लाने के लिए ब्रह्मा से प्रार्थना करनी होगी।

कई पीढ़ियों बाद सागर के कुल के भगीरथ ने हजारों सालों तक कठोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने गंगा को धरती पर उतारने की भगीरथ की मनोकामना पूरी कर दी। गंगा बहुत ही उद्दंड और शक्तिशाली नदी थी। वे यह तय करके स्वर्ग से उतरीं कि वे अपने प्रचण्ड वेग से धरती पर उतरेंगी और रास्ते में आने वाली सभी चीजों को बहा देंगी। शिव को गंगा के इस इरादे का अन्दाजा था इसीलिए उन्होंने गंगा को अपनी जटाओं में कैद कर लिया।

भागीरथ ने तब शिव को मनाया और फिर उन्होंने गंगा को धीरे-धीरे अपनी जटाओं से आजाद किया। और तब गंगा भगीरथी के नाम से धरती पर आई। उन राख के ढेरों से गुजरते हुए गंगा ने जहनु मुनि के आश्रम को डुबो दिया। गुस्से में आकर मुनि ने गंगा को लील लिया। एक बार फिर भगीरथ को मुनि से गंगा को मुक्त करने हेतु प्रार्थना करनी पड़ी। इस तरह गंगा बाहर आई और अब वो जाहनवी कहलाईं। इस तरह से गंगा का धरती पर बहना शुरू हुआ और लोग अपने पाप धोने उसमें पवित्र डुबकी लगाने लगे।

<u>आईए अब जानते हैं वास्तव मे क्या हुआ होगा :-</u>

<u>व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक सन्दर्भ : एक परिकल्पना लेखक की ---------</u>

पौराणिक कथाओं का वास्तविकता से क्या सम्बन्ध हैं और क्या वे प्रमाणिक हैं, यह प्रश्न अक्सर आम आदमियों के मन में उठता है , अमूमन हम ये सोचते हैं की पौराणिक कथाएं गल्प मात्र हैं जो अविश्वसनीय होती हैं, कोई किसी से जन्म ले लेता है, कद्रू से १००० साँपों का जन्म, वनिता से गरुड़ का जन्म, गौ से गोकर्ण का जन्म, इत्यादि बातें जीव विज्ञान के विरुद्ध लगती हैं, परन्तु यह जानना जरुरी है की महाभारत में या पुराणों में जितनी भी कथाएं हैं वे समस्त वेदों को विस्तार देने के लिए बनाई गयी हैं जो कुछ तो बिम्बात्मक ढंग से वेद की बातों को पहुँचाने के लिए है कुछ भारत में जो घटित हुआ उसका इस प्रकार कथानक के रूप में दिया गया की लोग उसमे रूचि लें और जाने, उस समय कोई लिखित नहीं होता था, क्या तो श्रुति ग्रन्थ होते थे या स्मृति ग्रन्थ होते थे| लिपि का अविष्कार बहुत बाद में हुआ, उसके बाद से ग्रंथों का लीपी बद्ध होना प्रारंभ हुआ शायद ईसा से ६००-७०० वर्ष पूर्व ही लिपियाँ लिखी जाने लगी | पाश्चात्य इतिहासकारों के अनुसार प्रथम लिपि ईसा से १००० वर्ष पूर्व सेमैटिक में अस्तित्व में आई, भारत में प्रथम लिपि ब्राह्मी मानी गयी है जो की उनके अनुसार ईसा से ६०० वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई, हम इसको स्वीकार भी कर लें तो यह मानना ही पड़ेगा की इसके पहले का इतिहास जो लिखित नहीं था वह था तो अवश्य, इसी क्रम में पौराणिक कथाएं रोचक कहानियों में परिवर्तित हो गयी, आज भी हम बच्चों को कोई बात कहनी होती है तो परियों की, जानवरों की कथाओं में परिवर्तित करके बताते हैं ताकि बच्चों की रूचि बनी रहे, ठीक वैसे ही पुरातन काल में जब कुछ लोग ही आचार्य थे वे जन जन तक उद्देश्यात्मक बातों को रुचिकर बनाने हेतु इस प्रकार कथा में गढ़ते थे |

आईये हम गंगा के अवतरण की बात करें, इसे पौराणिक दृष्टि से नही व्यवहारिक और वैज्ञानिक दृष्टि से देखें|

जब सृष्टि की उत्पत्ति हुई तब पूरा विश्व जल में डूबा था, यह बिग बेंग , गोड पार्टिकल्स, या हजारों वर्ष पूर्व लिखे ऋगवेद के नाशदिकीय सूक्त में लिखा है | जब जल धीरे धीरे उतरा तब सर्वोच्च पर्वत माला हिमालय पर जल का निकास आरंभ हुआ, हिमगिरी के दोनों तरफ तब सबसे पहले सभ्यता जन्मी एक सभ्यता कहलाई आज के विज्ञानिकों ने नाम दिया सिन्धु घाटी की सभ्यता दूसरी तरफ येलो रिवर की सभ्यता. जिसे चीनी सभ्यता भी कहते हैं. सिन्धु घाटी की सभ्यता सरस्वती नदी और सिन्धु नदी के किनारे किनारे पनपने लगी, कालांतर में सरस्वती प्रकृतिजन्य कारणों से लुप्त होने लगी तब भारत के मैदानी क्षेत्र में जल की भीषण समस्या आ पड़ी, उस समय भारत के सम्राट थे सगर, उन्होंने जल के ढूँढने के प्रयास का अश्वमेघ यज्ञ सा कार्य किया, इस प्रयत्न में कपिल मुनि जैसे महात्मा ऋषि की नाराजगी भी मिली, इस प्रयत्न में उन्होंने पाया की हिमालय की उच्च पर्वत मालाओं पर जल का विपुल भंडार कोनिकल आकर में ग्लेशियर जिसे कहते हैं पड़ा है, अगर उस जल को मैदानी हिस्सों में लाया जाय तो जल की समस्त समस्या दूर हो जायगी, उस समय के अभियंताओं से विमर्श कर योजना बनाई गयी और कैलाश के राजा शिव (यहाँ बता दूँ की शिव किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं , यह एक पदवी है जैसे तिब्बती क्षेत्र में लामा होते हैं, उसी प्रकार सनातन वैदिक धर्म में कई पदवी नाम के रूप में प्रचलित हो गयी जैसे इंद्र, नारद, ब्रह्मा, शिव, व्यास, इत्यादि इत्यादि) के पास वे

योजना लेकर गए और उन्हें बताया की भारत की रक्षा के लिए जल की कितनी आवश्यकता है और यह जल केवल उस हिम के रूप में संग्रहित या जल समूह के अन्दर निचले हिस्से में छिद्र कर ही निकला जा सकता है जो की उनके प्रदेश में पड़ता है , उनको यह भी बताया गया की छिद्रोपरांत जल इस वेग से निकलेगा की सब कुछ जलआप्लावित हो सकता है अतः उन्हें अपने वन क्षेत्र को सघन कर उस वेग को उसमे अटकाना होगा ताकि यह जब निचे उतारे तो प्रलय कारी न हो, (पौराणिक कथा में इसे कहा गया की शिव जी ने अपनी जटाओं में प्रवाह को समां लिया) उसके बाद जब जल सामान्य गति से नीचे उतरेगा तब वहां से प्राकृतिक अवस्था देखते हुए जल के मार्ग को एक नहर के रूप में उस समय की बसी सभ्यता के मध्य से ले जाते हुए समुद्र में प्रवाहित करने की योजना बनाई गयी, इस नहर बनाने के उद्यम में ६० हज़ार कर्मियों की मृत्यु हुई , चूँकि उनकी प्रजा राजा के पुत्र ही होती है जो प्रजा कर्मचारी भी हैं ; "प्रजा स्यात् सन्ततौ जने" ऐसा शब्दकोश में बताया है । अतः कहा गया की सागर के ६०००० पुत्रों की मृत्यु हुई, यह जल को ला कर समुद्र तक छोड़ना बहुत दुरूह कार्य था, उस समय जब स्वचालित मशीने भी नहीं थी, अतः इस कार्य में सम्राट सगर ने प्रारंभ किया उनके पुत्र अंशुमान ने आगे बढाया, जब उनके पुत्र भागीरथ आये तब उन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने का निश्चय किया पौराणिक कथा में कहा गया है की भागीरथ ने एक पांव पर खड़े होकर हजारों साल तपस्या की इसको शाब्दिक रूप में न लेकर सांकेतिक रूप में लें तो यह कह सकते हैं की भागीरथ ने इतनी मेहनत की कि उन्हें जरा भी समय खड़े रहने का नही मिला बस वे निरंतर एक पाँव पर थे अर्थार्थ गतिमान थे, उन्होंने नहर पूरी होने के बाद कैलाश नरेश शिव से जैसा ऊपर बताया गया उस प्रकार हिम क्षेत्र के ग्लेशियर को तोड़ जल प्रवाह बाहर निकलवाया उस वेग को रोकने के लिए इन तीन पीढ़ियों के क्रम में इतने पेड़ पौधे हो गए थे की प्रवाह के वेग को वे नियंत्रित कर सके, चूँकि जल ग्लेशियर का शुद्ध जल था और उन पहाड़ों में इतनी मात्रा में खनिज थे कि जल कभी प्रदूषित नहीं हो सकता था और ऊपर से जल प्रवाह को संयमित करने के लिए वनस्पति औषधियों के वृक्ष थे जिनके संपर्क में जल परिमार्जित हो जाता था इसीलिए गंगा जल में कभी कीड़े नहीं पड़ते और स्वास्थ्य के लिए इतना लाभकारी माना गया की इसे अमृत कहा गया | इस तरह सागर से प्रारंभ यह प्रोजेक्ट अंत में भागीरथ प्रयास से पूरा हुआ और गंगासागर में जब यह जल पहुंचा तो ऋषि कपिल भी प्रसन्न हो इस कार्य में आहूत सभी लोगों को श्रद्धांजली दे अपने को उपकृत कियो | तो यह है व्यवहारिक गंगा अवतरण की कथा जिसे रोचकता देने के लिए संकेतों में बिम्बों में धार्मिक जामा पहना लोगों तक पहुँचाया गया क्यूंकि भारत मनस स्थिति है ऐसी ही की धर्म भीरु होने से वे बाते अविलम्ब समझ लेते है|
आईये कुछ रूपक शब्द को समझाते हैं जो पौराणिक कथा में वर्णित हैं;
रूपक शब्द युग्म
स्वर्ग - त्रिविष्टप् (तिब्बत)
(साठ हज़ार) पुत्र - (साठ हज़ार) प्रजा
(भगीरथ की) तपस्या - (भगीरथ की सतत) उद्यमशीलता
शंकर की जटा - हिमालय की पहाड़ियां
कपिल मुनि - कपिल नक्षत्र
(कपिल मुनि का) शाप - (कपिल नक्षत्र का) प्रभाव
साठ हज़ार पुत्र जलकर भस्म - साठ हज़ार प्रजा की मृत्यु
पिछले एक सहस्त्र वर्षों की पराधीनता के कारण हम पौराणिक कथाओं के भाव को नहीं समझ पाए । समय की मांग है कि हम इन कथाओं से सही अर्थ को समझें और भगीरथ के ही तरह अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार समाज कल्याण के लिए सतत् लगे रहें ।

कुछ गंगा के बारे में मान्यताएं और उनका वैज्ञानिक आधार:
गंगा की शुचिता हेतु धार्मिक आधार पर कई नियम भी बनाये गए ताकि यह अमृत सलिला कभी प्रदूषित न हो, जैसे घाटों की निरंतर सफाई, इसमें मल मूत्र त्यागने की मनाई, कुछ कार्य गंगा में ही किये जाते हैं जैसे अस्थि विसर्जन.. इसके पीछे भी बहुत बड़ा वैज्ञानिक आधार माना गया है, अस्थियों में कैल्शियम होता है जो भूमि को उर्वरक बनता है, जब गंगा के जल के साथ यह अस्थियाँ तट की भूमि पर आती है तो यह भूमि उर्वरक हो जाती है इसी लिए अस्थि विसर्जन हरिद्वार या प्रयाग में उचित माना गे है ताकि यहाँ से यह नीचे के पुरे कृषि क्षेत्र में गंगा जल सिंचित करती है और सही में बाद की भूमि बहुत उर्वरक होती है|
वैज्ञानिक संभावनाओं के अनुसार गंगाजल में पारा अर्थात मर्करी विद्यमान होता है जिससे हड्डियों में कैल्शियम और फॉस्फोरस पानी में घुल जाता है, जो जल-जंतुओं के लिए एक पौष्टिक आहार है। वैज्ञानिक दृष्टि से हड्डियों में गंधक (सल्फर) विद्यमान होता है, जो पारे के साथ मिलकर पारद का निर्माण करता है, इसके साथ-साथ ये दोनों मिलकर मरकरी सल्फाइड सॉल्ट का निर्माण करते हैं। हड्डि यों में बचा शेष कैल्शियम पानी को स्वच्छ रखने का काम करता है। धार्मिक दृष्टि से पारद शिव का प्रतीक है और गंधक शक्ति का प्रतीक है। सभी जीव अंतत: शिव और शक्ति में ही विलीन हो जाते हैं। सचमुच पवित्र है गंगा का जल : इसका वैज्ञानिक आधार सिद्ध हुए वर्षों बीत गए। वैज्ञानिकों अनुसार नदी के जल में मौजूद बैक्टीरियोफेज नामक जीवाणु गंगाजल में मौजूद हानिकारक सूक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देते अर्थात ये ऐसे जीवाणु हैं, जो गंदगी और बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर देते हैं। इसके कारण ही गंगा का जल नहीं सड़ता है।
भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी गंगा का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। इसका जल घर में शीशी या प्लास्टिक के डिब्बे आदि में भरकर रख दें तो बरसों तक खराब नहीं होता है और कई तरह के पूजा-पाठ में इसका उपयोग किया जाता है। ऐसी आम धारणा है कि मरते समय व्यक्ति को यह जल पिला दिया जाए तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।
गंगा जल में प्राणवायु की प्रचुरता बनाए रखने की अदभुत क्षमता है। इस कारण पानी से हैजा और पेचिश जैसी बीमारियों का खतरा बहुत ही कम हो जाता है, लेकिन अब वह बात नहीं रही।
गंगा में ऑक्सीजन धारण करने की अद्भुत क्षमता है और इसके जरिए बैक्टीरिया को मारकर यह खुद को साफ करती रहती है।
अत्याधिक प्रदूषित गंगा को साफ करने के लिए कई प्रस्ताव बनाए गए लेकिन कोई खास प्रगति नहीं हो सकी।
गंगा के प्रवाह में ऐसे भी कई स्थान हैं जहाँ पानी इतना साफ नहीं है कि वहाँ स्नान किया जाए। इसके बाद भी इसे पवित्र नदी माना जाता है और लाखों लोग रोज इसमें स्नान करते हैं।
गंगा न सिर्फ एक पवित्र नदी है जिसमें लोग स्नान करते हैं बल्कि इसके कई स्थानों पर नौकायन भी किया जाता है।
गंगा अपनी सहायक नदियों सहित, भारत और बंग्लादेश की कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
अंत में:
आईये हम संकल्प लें की जिस पवित्र अमृतमयी गंगा को भागीरथ ने हमे सौंपा था उसे उसी अवस्था में ला हम भागीरथ के ऋण को कुछ तो उतारें |
हमने इन ७५ दिनों में देखा है, की प्रदुषण ग्रषित गंगा जो हरिद्वार तक आते आते इतनी प्रदूषित हो चुकी थी की स्नान लायक भी नहीं थी अब जल विशेषज्ञों ने घोषित किया है कि गंगा इतनी शुद्ध हो चुकी है कि इसमें हम स्नान कर सकते हैं | अतः प्रकृति से सीख लें और माँ गंगा को बचाएं |

||संध्या गंगा दर्शन की||
सुरेश चौधरी 'इंदु'

जाह्नवी की पावन तरंग तरिणि सुता का मादक संग
है ज्ञान दायिनी मोक्ष बोधिनी, विमल सुभग तरंग
कल कल नन्दित शिखर चुम्बित, उच्छल वेग अनन्त
हरिपद से निःसृत मुदित वन्दित, जय गङ्गे जय संत

यह अरुणिमा, यह क्षितिज लालिमा, यह जाह्नवी प्रवास
प्रफुल्लित तन उत्कर्ष, रोमांचित मन, मचलता श्वास
अरुष-पट से सजती इला, जल सघन घन निस्तब्ध सा
द्रूमदल की पांत से, व्युष सहभाव ज्यों उपलब्ध सा

चिन्ह परिणय सजा, धानी चुनडी ओढ़ ऊषा चली
बिम्ब प्रीत का बिखरा वो मन्दाकिनी मन को छली
अरुण-अस्फुट व्योम सरोज सम, प्रीति सुरभित हो चली
निहित कर संतुष्टि सम्य प्रकृति सृजन-अंकुर बो चली

सौम्य अनुपम दिवाकर वारिद दर्शित उदित है जहाँ
सज्जित व्योम छटा शालार मेघाच्छादित है यहाँ
नील अम्बर है, श्वेत जल विहीन मेघ दर्शन कहाँ
आरोहण है स्वर्ग से हिम सुता जाह्नवी का वहाँ

देख यह अद्‌भुत छवि अद्‌भुत रचना रचना कार की
लुभा रही हमें जलज प्रभाषित घटा इडा द्‌वार की
बना मेघ-तुलिका से विभिन्न आकृति गंग हार की
हृदय प्रफुल्लित देख दृश्यावली अद्‌वेत सार की ।।

श्री गंगा स्तोत्र...
रचना : आदि जगद्‌गुरु शंकराचार्य...
लावनी छंद में अनुवाद ...(सुरेश चौधरी 'इंदु" द्‌वारा).

गंगां वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतं ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु मां ।।

गंगा वारि है मनोहारी, विष्णु चरण से निकल पड़ी
जो शिव शीश धरे पाप हरे, मुझे शुद्‌ध करो माँ सुरसरी

देवि! सुरेश्वरि! भगवति! गङ्गे त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे ।
शङ्करमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥1॥

पावन माँ भगवती तरंगा, तीन लोक को यह तारे
मात शम्भु भाल विहार करे , विमल बुद्‌धि निज पद धारे

भागीरथिसुखदायिनि मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।
नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥ 2 ॥

मात भागिरथी सुख प्रदाता, जल महत्व वेद बताते
अनभिज्ञ आपकी महिमा से, माँ रक्षा हेतु बुलाते

हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥ 3 ॥

नीर क्षीर चरनामृत प्रभु का, हिम शशि सम श्वेत तरंगा
नष्ट कर मात कष्ट पाप हर, भव पार करो माँ गंगा

तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥ 4 ॥

ग्रहण कर जल परम पद पाए, दुख कभी उस घर न आये
न बिगाड़ सके यमराज कभी, जो भक्त मात गुण गाये

पतितोद्‌धारिणि जाह्नवि गङ्गे खण्डित गिरिवरमण्डित भङ्गे ।
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवन धन्ये ॥ 5 ॥

पतित तारिणी मात जाह्नवी, हिम गिरी काट तू निकली
आप भीष्म माता जह्नु सुता, त्रिलोक पाप हरने चली

कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।
पारावारविहारिणिगङ्गे विमुखयुवति कृततरलापाङ्गे ॥ 6 ॥

पूर्ण कामना करने वाली, तेरी स्तुति कर शोक टले
आतुर जलधि से मिलन को ज्यूँ,पिय मिलनको नार मचले

तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोपि न जातः ।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे ॥ 7 ॥

स्नान से जन्म बंधन कटते, महिमा अपार माँ गंगे
नरकों से तू मुक्ति कराती, करे कलुष विनाश गंगे

पुनरसदङ्गे पुण्यतरङ्गे जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे ।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये ॥ 8 ॥

पुण्य तरंगे करुणा गंगे , दिव्य नीर से शुद्‌ध करो

इंद्र मुकुट मणि राजे पग पर, शरणागत शुभम सुख भरो

रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम् ।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥ **9** ॥

रोग शोक पाप कुमति तापा, भगवती हरो इन सबको
त्रिभुवन सार हार वसुधा की, सहारा तू बची अबतो

अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातरवन्द्ये ।
तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥ **10** ॥

अलकानंदा परमानंदा , करुण स्वर से वंदन करूँ
सम्मान दो तट निवासी को, मिलता ज्यो वैकुण्ठ बसूं

वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः ।
अथवाश्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥ **11** ॥

तुमसे दूर रह बनूँ सम्राट , ऐसा भी क्या जी आना
अच्छा हो मछली या कछुआ, या तट चंडाल बनाना

भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
गङ्गास्तवमिममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥ **12** ॥

हे देवि ब्रह्माण्ड स्वामिनि, शुद्ध मेरा तन मन करो
नित्य स्त्रोत्र गंगा का गाऊं, निश्चित जीवन सफल करो

येषां हृदये गङ्गा भक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुराकन्ता पञ्झटिकाभिः परमानन्दकलितललिताभिः ॥ **13** ॥

गंग भक्ति जिनके हृदय बसे, सुख और मुक्ति वो पाता
लय से युक्त यह स्त्रोत्र गंगा, उर बहुत आनंद लाता

गङ्गास्तोत्रमिदं भवसारं वांछितफलदं विमलं सारम् ।
शङ्करसेवक शङ्कर रचितं पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः ॥ **14**॥

दोहा :
गंगा स्तुति भगवत चरण, करती तन मन शुद्ध
दे वांछित फल स्त्रोत्र यह, शंकर रचित प्रबुद्ध

==0==

गंगा लहरी (पियूष लहरी)
पंडित जगन्नाथ शास्त्री।
(आलेख श्रोत अज्ञात)

प्रेम किया है पण्डित जी,
संग कैसे छोड़ दूँगी **?**

"पण्डितराज"
सत्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्ध था, दूर दक्षिण में गोदावरी तट के एक छोटे राज्य की राज्यसभा में एक विद्वान् ब्राह्मण सम्मान पाता था, नाम था जगन्नाथ शास्त्री। साहित्य के प्रकांड विद्वान्, दर्शन के अद्भुत ज्ञाता। इस छोटे से राज्य के महाराज चन्द्रदेव के लिए जगन्नाथ शास्त्री सबसे बड़े गर्व थे। कारण यह, कि जगन्नाथ शास्त्री कभी किसी से शास्त्रार्थ में पराजित नहीं होते थे। दूर दूर के विद्वान् आये और पराजित हो कर जगन्नाथ शास्त्री की विद्वता का ध्वज लिए चले गए।
पण्डित जगन्नाथ शास्त्री की चर्चा धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत में होने लगी थी। उस समय दिल्ली पर मुगल शासक शाहजहाँ का शासन था। शाहजहाँ मुगल था, सो भारत की प्रत्येक सुन्दर वस्तु पर अपना अधिकार समझना उसे जन्म से सिखाया गया था। पण्डित जगन्नाथ की चर्चा जब शाहजहाँ के कानों तक पहुँची तो जैसे उसके घमण्ड को चोट लगी। "मुगलों के युग में एक तुच्छ ब्राह्मण अपराजेय हो, यह कैसे सम्भव है?", शाह ने अपने दरबार के सबसे बड़े मौलवियों को बुलवाया और जगन्नाथ शास्त्री तैलंग को शास्त्रार्थ में पराजित करने के आदेश के साथ महाराज चन्द्रदेव के राज्य में भेजा। " जगन्नाथ को पराजित कर उसकी शिखा काट कर मेरे कदमों में डालो...." शाहजहाँ का यह आदेश उन चालीस मौलवियों के कानों में स्थायी रूप से बस गया था।
सप्ताह भर पश्चात मौलवियों का दल महाराज चन्द्रदेव की राजसभा में पण्डित जगन्नाथ को शास्त्रार्थ की चुनौती दे रहा था। गोदावरी तट का ब्राह्मण और अरबी मौलवियों के साथ शास्त्रार्थ, पण्डित जगन्नाथ ने मुस्करा कर सहमति दे दी। मौलवी दल ने अब अपनी शर्त रखी, "पराजित होने पर शिखा देनी होगी..."। पण्डित की मुस्कराहट और बढ़ गयी, "स्वीकार है, पर अब मेरी भी शर्त है। आप सब पराजित हुए तो मैं आपकी दाढ़ी उतरवा लूंगा।"
मुगल दरबार में "जहाँ पेंड़ न खूंट वहाँ रेंड़ परधान" की भांति विद्वान कहलाने वाले मौलवी विजय निश्चित समझ रहे थे, सो उन्हें इस शर्त पर कोई आपत्ति नहीं हुई।

शास्त्रार्थ क्या था; खेल था। अरबों के पास इतनी आध्यात्मिक पूँजी कहाँ जो वे भारत के समक्ष खड़े भी हो सकें। पण्डित जगन्नाथ विजयी हुए, मौलवी दल अपनी दाढ़ी दे कर दिल्ली वापस चला गया...
दो माह बाद महाराज चन्द्रदेव की राजसभा में दिल्ली दरबार का प्रतिनिधिमंडल याचक बन कर खड़ा था, "महाराज से निवेदन है कि हम उनकी राज्य सभा के सबसे अनमोल रत्न पण्डित जगन्नाथ शास्त्री तैलंग को दिल्ली की राजसभा में सम्मानित करना चाहते हैं, यदि वे दिल्ली पर यह कृपा करते हैं तो हम सदैव आभारी रहेंगे"।
मुगल सल्तनत ने प्रथम बार किसी से याचना की थी। महाराज चन्द्रदेव अस्वीकार न कर सके। पण्डित जगन्नाथ शास्त्री दिल्ली के हुए, शाहजहाँ ने उन्हें नया नाम दिया "पण्डितराज"।
दिल्ली में शाहजहाँ उनकी अद्भुत काव्यकला का दीवाना था, तो युवराज दारा शिकोह उनके दर्शन ज्ञान का भक्त। दारा शिकोह के जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव पण्डितराज का ही रहा, और यही कारण था कि मुगल वंश का होने के बाद भी दारा मनुष्य बन गया।
मुगल दरबार में अब पण्डितराज के अलंकृत संस्कृत छंद गूंजने लगे थे। उनकी काव्यशक्ति विरोधियों के मुह से भी वाह-वाह की ध्वनि निकलवा लेती। यूँ ही एक दिन पण्डितराज के एक छंद से प्रभावित हो कर शाहजहाँ ने कहा- अहा! आज तो कुछ माँग ही लीजिये पंडितजी, आज आपको कुछ भी दे सकता हूँ।
पण्डितराज ने आँख उठा कर देखा, दरबार के कोने में एक हाथ माथे पर और दूसरा हाथ कमर पर रखे खड़ी एक अद्भुत सुंदरी पण्डितराज को एकटक निहार रही थी। अद्भुत सौंदर्य, जैसे कालिदास की समस्त उपमाएं स्त्री रूप में खड़ी हो गयी हों। पण्डितराज ने एक क्षण को उस रूपसी की आँखों मे देखा, मस्तक पर त्रिपुंड लगाए शिव की तरह विशाल काया वाला पण्डितराज उसकी आँख की पुतलियों में झलक रहा था। पण्डित ने मौन के स्वरों से ही पूछा- चलोगी?
लवंगी की पुतलियों ने उत्तर दिया- अविश्वास न करो पण्डित! प्रेम किया है....
पण्डितराज जानते थे यह एक नर्तकी के गर्व से जन्मी शाहजहाँ की पुत्री 'लवंगी' थी। एक क्षण को पण्डित ने कुछ सोचा, फिर ठसक के साथ मुस्कुरा कर कहा-

न याचे गजालीम् न वा वजीराजम्
न वित्तेषु चित्तम् मदीयम् कदाचित।
इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकुम्भा,
लवंगी कुरंगी दृगंगी करोतु।।

शाहजहाँ मुस्कुरा उठा! कहा- लवंगी तुम्हारी हुई पण्डितराज। यह भारतीय इतिहास की एकमात्र घटना है जब किसी मुगल ने किसी हिन्दू को बेटी दी थी। लवंगी अब पण्डित राज की पत्नी थी।
युग बीत रहा था। पण्डितराज दारा शिकोह के गुरु और परम मित्र के रूप में ख्यात थे। समय की अपनी गति है। शाहजहाँ के पराभव, औरंगजेब के उदय और दारा शिकोह की निर्मम हत्या के पश्चात पण्डितराज के लिए दिल्ली में कोई स्थान नहीं रहा। पण्डित राज दिल्ली से बनारस आ गए, साथ थी उनकी प्रेयसी लवंगी।
बनारस तो बनारस है, वह अपने ही ताव के साथ जीता है। बनारस किसी को इतनी सहजता से स्वीकार नहीं कर लेता। और यही कारण है कि बनारस आज भी बनारस है, नहीं तो अरब की तलवार जहाँ भी पहुँची वहाँ की सभ्यता-संस्कृति को खा गई। यूनान, मिश्र, फारस, इन्हें सौ वर्ष भी नहीं लगे समाप्त होने में, बनारस हजार वर्षों तक प्रहार सहने के बाद भी "ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा...." गा रहा है। बनारस ने एक स्वर से पण्डितराज को अस्वीकार कर दिया। कहा- लवंगी आपके विद्वता को खा चुकी, आप सम्मान के योग्य नहीं।
तब बनारस के विद्वानों में पण्डित अप्पय दीक्षित और पण्डित भट्टोजि दीक्षित का नाम सबसे प्रमुख था, पण्डितराज का विद्वत समाज से बहिष्कार इन्होंने ही कराया।
पर पण्डितराज भी पण्डितराज थे, और लवंगी उनकी प्रेयसी। जब कोई कवि प्रेम करता है तो कमाल करता है। पण्डितराज ने कहा- लवंगी के साथ रह कर ही बनारस की मेधा को अपनी सामर्थ्य दिखाऊंगा।
पण्डितराज ने अपनी विद्वता दिखाई भी, पंडित भट्टोजि दीक्षित द्वारा रचित काव्य "प्रौढ़ मनोरमा" का खंडन करते हुए उन्होंने " प्रौढ़ मनोरमा कुचमर्दनम" नामक ग्रन्थ लिखा। बनारस में धूम मच गई, पर पण्डितराज को बनारस ने स्वीकार नहीं किया।
पण्डितराज ने पुनः लेखनी चलाई, पण्डित अप्पय दीक्षित द्वारा रचित "चित्रमीमांसा" का खंडन करते हुए " चित्रमीमांसाखंडन" नामक ग्रन्थ रच डाला।
बनारस अब भी नहीं पिघला, बनारस के पंडितों ने अब भी स्वीकार नहीं किया पण्डितराज को।
पण्डितराज दुखी थे, बनारस का तिरस्कार उन्हें तोड़ रहा था।
असाढ़ की सन्ध्या थी। गंगा तट पर बैठे उदास पण्डितराज ने अनायास ही लवंगी से कहा- गोदावरी चलोगी लवंगी? वह मेरी मिट्टी है, वह हमारा तिरस्कार नहीं करेगी।
लवंगी ने कुछ सोच कर कहा- गोदावरी ही क्यों, बनारस क्यों नहीं? स्वीकार तो बनारस से ही करवाइए पंडीजी।
पण्डितराज ने थके स्वर में कहा- अब किससे कहूँ, सब कर के तो हार गया...
लवंगी मुस्कुरा उठी, "जिससे कहना चाहिए उससे तो कहा ही नहीं। गंगा से कहो, वह किसी का तिरस्कार नहीं करती। गंगा ने स्वीकार किया तो समझो शिव ने स्वीकार किया।"
पण्डितराज की आँखे चमक उठीं। उन्होंने एकबार पुनः झाँका लवंगी की आँखों में, उसमें अब भी वही बीस वर्ष पुराना उत्तर था-"प्रेम किया है पण्डित! संग कैसे छोड़ दूंगी?"
पण्डितराज उसी क्षण चले, और काशी के विद्वत समाज को चुनौती दी-" आओ कल गंगा के तट पर, तल में बह रही गंगा को सबसे ऊँचे स्थान पर बुला कर न दिखाया, तो पण्डित जगन्नाथ शास्त्री तैलंग अपनी शिखा काट कर उसी गंगा में प्रवाहित कर देगा......"
पल भर को हिल गया बनारस, पण्डितराज पर अविश्वास करना किसी के लिए सम्भव नहीं था। जिन्होंने पण्डितराज का तिरस्कार किया था, वे भी उनकी सामर्थ्य जानते थे।
अगले दिन बनारस का समस्त विद्वत समाज दशाश्वमेघ घाट पर एकत्र था।
पण्डितराज घाट की सबसे ऊपर की सीढ़ी पर बैठ गए, और गंगलहरी का पाठ प्रारम्भ किया। लवंगी उनके निकट बैठी थी।
गंगा बावन सीढ़ी नीचे बह रही थी। पण्डितराज ज्यों ज्यों श्लोक पढ़ते, गंगा एक एक सीढ़ी ऊपर आती। बनारस की विद्वता आँख फाड़े निहार रही थी।
गंगलहरी के इक्यावन श्लोक पूरे हुए, गंगा इक्यावन सीढ़ी चढ़ कर पण्डितराज के निकट आ गयी थी। पण्डितराज ने पुनः देखा लवंगी की आँखों में, अबकी लवंगी बोल पड़ी- क्यों अविश्वास करते हो पण्डित? प्रेम किया है तुमसे...
पण्डितराज ने मुस्कुरा कर बावनवाँ श्लोक पढ़ा। गंगा ऊपरी सीढ़ी पर चढ़ी और पण्डितराज-लवंगी को गोद में लिए उतर गई।
बनारस स्तब्ध खड़ा था, पर गंगा ने पण्डितराज को स्वीकार कर लिया था।
तट पर खड़े पण्डित अप्पाजी दीक्षित ने मुह में ही बुदबुदा कर कहा- क्षमा करना मित्र, तुम्हें हृदय से लगा पाता तो स्वयं को सौभाग्यशाली समझता, पर धर्म के लिए तुम्हारा बलिदान आवश्यक था। बनारस झुकने लगे तो सनातन नहीं बचेगा।
युगों बीत गए। बनारस है, सनातन है, गंगा है, तो उसकी लहरों में पण्डितराज भी हैं।

<u>पंडित जगगनाथ शास्त्री -एक जीवन परिचय</u>

पंडितराज का जीवन
पंडितराज का जन्म बनारस के एक तेलुगू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम पेरु भट्ट और माता का नाम लक्ष्मी था। पिता, वेदान्त, न्याय वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और व्याकरण के अद्वितीय अध्येता थे। जगन्नाथ ने अपने पिता की छत्र-छाया में शिक्षा ग्रहण की। युवावस्था में ही उनके ज्ञान का प्रकाश कुछ इस तरह उद्भाषित हुआ कि तत्कालीन बादशाह शाहजहाँ ने उन्हें पंडितराज की उपाधि से विभूषित किया। शाहजहाँ ने अपने पुत्र दाराशिकोह को संस्कृत की शिक्षा देने के लिये अपने दरबार में उन्हें सम्मानित स्थान दिया।
शाहजहाँ का शासन काल 30 वर्षों (1628 से 1658 तक) का है। इसी दौर में पंडितराज उसके आश्रय में रहे होंगे। अपने ग्रंथ जगदाभरण में उन्होंने 'दिल्ली वल्लभ' की चर्चा की है। सम्भव है कि इस शब्द से उनका संकेत दाराशिकोह की ओर हो, जो उस वक्त दिल्ली का गवर्नर हुआ

करता था। रसगंगाधर में शाहजहाँ के अतिरिक्त असफाक खान और नूरुद्दीन की चर्चा आई है। असफाक खान के विषय में इसमें चर्चा की गई है।
असफाक खान नूरजहाँ का भाई अर्थात शाहजहाँ का मामा था उसकी मृत्यु 1641 ई. में हुई। अपनी रचना असफविलास में पंडितराज ने उसे सामन्तों में सर्वश्रेष्ठ घोषित किया है।
अपनी विभिन्न रचनाओं में पंडितराज ने इनके अलावा नूरुद्दीन (जिसे कई व्याख्याकारों ने जहाँगीर माना है), कामरूप (आसाम) के अधिपति प्राणनारायण, उदयपुर के जगत सिंह आदि की भी चर्चा की है। इन उल्लेखों से शाहजहाँ के दरबार से पंडितराज के गहरे सम्बन्धों का पता चलता है।

पंडितराज का रचना संसार
पंडितराज की रचनाओं में रसगंगाधर, भामिनी विलास, असफ विलास, चित्रमीमांसा खण्डन, जगदाभरण, मनोरमाकुचमर्दनी रचना शब्द कौस्तुमशातेणोजन प्रमुख है।
पंडितराज ने अपनी रचना रसगंगाधर में काव्य के स्वरूप, कारण, भेद-प्रभेद, वाणियों के भेद, रस, भाव, गुण, लक्षण, उपमा और अलंकारों का विवेचन किया है। यह पूरा ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं है। इस अधूरे ग्रंथ के सहारे भी कहा जा सकता है कि सूत्रवृत्ति शैली में रचित इस ग्रंथ में विषय का बहुत ही सूक्ष्म, गम्भीर और पांडित्यपूर्ण विवेचन किया गया है। रसगंगाधर संस्कृत साहित्य की आलोचना का प्रौढ़तम उदाहरण है। इसमें इनकी साहित्यिक प्रतिमा का चरम प्रसार दिखलाई पड़ता है।
पंडितराज ने रस गंगाधर में अपनी पाँच लहरियों की चर्चा की है। गंगा लहरी (इसे पीयूष लहरी भी कहा जाता है), करुण लहरी, सुधालहरी, अमृत लहरी और लक्ष्मी लहरी, नामक पाँच लहरियाँ हैं। रसगंगाधर के उल्लेख के अनुसार ये पाँच भावों के अप्रतिम उदाहरण हैं। गँगा लहरी के 52 श्लोकों में गंगा की सरस, सुबोध और मनोहारी स्तुति की गई है। इसी प्रकार अमृत लहरी के दस श्लोकों में यमुना, करुण लहरी के 55 श्लोक में विष्णु, लक्ष्मी लहरी के 41 पद्यों में लक्ष्मी और सुधा लहरी में सूर्य की मनोहारी स्तुति की गई है।

पंडितराज के बारे में किंवदन्तियाँ
पंडितराज जगन्नाथ अपने युग के अप्रतिम व्यक्तित्व थे। उनके बारे में तरह-तरह की किंवदन्तियाँ प्रचलित हुई। इन किंवदन्तियों का ऐतिहासिक आधार नहीं है। उदाहरण के लिये अकबर के साथ पंडितराज के शतरंज खेलने की कथा को लिया जा सकता है। इसमें कहा गया है कि जब वे दोनों शतरंज खेल रहे थे, उसी वक्त किसी राजपूत स्त्री से उत्पन्न कन्या लवंगी ने सिर पर घड़ा रखे प्रवेश किया। नशे में चूर बादशाह ने उन्हें इसका वर्णन इच्छानुकूल करने के लिये और वायदा किया कि वह उनकी इस इच्छा को अवश्य पूरा करेगा।
पंडितराज के वर्णन से वह बहुत ही प्रभावित हुआ। वचनबद्ध होने के कारण बादशाह ने उस कन्या को उन्हें समर्पित किया। हालांकि अकबर और पंडितराज के जीवन काल में बड़ा अन्तर होने के कारण इस घटना को सत्य नहीं माना जा सकता है।
इसी घटना को दूसरी किंवदन्ती के रूप में कुछ हेर-फेर के साथ प्रस्तुत किया जाता रहा है। कहा जाता है कि लवंगी कोई और नहीं, शाहजहाँ की पुत्री थी। एक रोज शाहजहाँ के कुछ पूछने पर पंडितराज के उत्तर के बाद उसने लवंगी को उन्हें समर्पित कर दिया। पंडितराज के साथ काशी के पंडितों के द्वेष की अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। इस द्वेष का कारण राजदरबार से इनकी सम्बद्धता भी हो सकती है।
संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार अप्पय दीक्षित के साथ पंडितराज के तकरार की कथा भी प्रचलित है। कहा जाता है कि एक रोज पंडितराज अपनी प्रेयसी लवंगी को गले लगाए चादर ओढ़ कर वाराणसी में गंगा के किनारे लेटे थे। उनकी सफेद शिखा चारपाई के बाहर लटक रही थी। उसी समय अप्पय दीक्षित गंगास्नान से लौट रहे थे। वृद्ध को एक युवती के साथ लेटा हुआ देख कर उन्होंने टिप्पणी की। इसी समय पंडितराज ने मुँह से चादर हटाया।
पंडितराज को देखकर उन्होंने तुरन्त बात बदल दी। अप्पय दीक्षित के नाम से इस सन्दर्भ में प्रचलित श्लोक उनका नहीं, स्वयं पंडितराज का है। रसगंगाधर में आक्षेपालंकार के उदाहरण के रूप में उन्होंने इसे प्रस्तुत किया है।

गंगा लहरी की गंगा

इन किंवदन्तियों के बीच लवंगी नामक यवनी कन्या से पंडितराज के सम्बन्ध के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। सम्भव है विलासित के आगार शाही दरबार से सम्बद्ध होने के कारण युवक पंडित राज का मन चंचल हो उठा हो और यवनी कन्या से उन्होंने सम्पर्क स्थापित किया हो।
कहा जाता है कि वृद्धावस्था में जब पंडितराज काशी पहुँचे तो अप्पय दीक्षित आदि विद्वानों ने मलेच्छ और यवनी संसर्ग से दूषित कहकर उनका तिरस्कार किया। उन्हें जाति बहिष्कृत कर दिया गया। दुखी पंडितराज गंगातट पर पहुँचे। उन्होंने गंगालहरी के पद्यों का पाठ कर गंगा मैय्या का स्मरण किया। माता जाह्णवी एक-एक पद्य पर एक एक सीढ़ी ऊपर उठती गई। बावनवाँ पद्य पूरा होते-होते वह पंडितराज और लवंगी के पास पहुँच गई। उन्होंने दोनों को अपने जल के स्नान से पवित्र कर दिया। काशी का पंडित समाज यह देखकर दंग रह गया।
गंगा लहरी पंडितराज की अप्रतिम रचना है इसके 52 श्लोकों में गंगा की स्तुति अलग-अलग भावों से की गई है। इन श्लोकों में वेद पुराणों के गंगा तत्त्व का अपूर्व वर्णन किया गया है।
उदाहरण के लिये एक श्लोक में कहा गया है कि “हे माता! पागल लोग भी जिन पापों को अत्यन्त निन्दित समझते हैं, पतित लोग भी जिसे त्याज्य मानते। संस्कारहीन बालक भी जिनका नाम तक नहीं लेते, दुर्जन लोग भी जिनसे भयभीत हो जाते। ऐसे कितनी ही पापों का नाश करने में निरन्तर लगी, तुम बिल्कुल नहीं थकतीं। तू अकेले ही इन पर विजय पाती हो।”

गंगा लहरी
गंगा दशमी पर गंगालहरी पाठ का पार्विक महत्व है. मुझे कहीं हिंदी अनुवाद नहीं मिला, तो विचार आया, मूल के साथ हिंदी छंदबद्ध अनुवाद प्रस्तुति लोकोपयोगी होगी. इस विचार से आचार्य जगन्नाथ मिश्रजी की गंगा लहरी उपलब्ध संक्षिप्त परिचय के साथ प्रस्तुत है. अप्रकाशित छंदानुवाद. किसी भी भूल/अशुद्धि के लिए क्षमा याचना सहित अनुरोध कि संशोधन सुझावों का स्वागत है.
पिता पेरुभट्ट और माँ लक्ष्मीदेवी के आत्मज, दक्षिण भारत के पण्डितराज जगन्नाथ आचार्य बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न और आचार्य अप्पय्यदीक्षित के प्रतिद्वन्दी थे। ये मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार आश्रय में थे और शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र दाराशिकोह को संस्कृत पढ़ाते थे। शाही दरबारी सरदार आसिफ अली की इनसे इतनी घनिष्टता थी कि उनकी मृत्यु के बाद श्रद्धांजलि रूप 'आसिफ विलास' नामक काव्य लिखा। लवंगी नामक एक यवन कन्या को देख उस पर ये ऐसे अनुरक्त हो गए कि बादशाह शाहजहाँ से उसकी याचना कर ली:

न याचे गजालिं न वा वाजिराजिं ,
न वित्तेषु चित्तं मदीयं कदाचित्।
इयं सुस्तनी मस्त कन्यस्तकुम्भा,
लवङ्गी कुरङ्गीदृगङ्गी करौतु ॥

इक्कीसवीं शताब्दी में ये कल्पनातीत साहस था। बादशाह ने तो उनकी मांग पूरी कर दी पर उन्हें तीव्र सामाजिक भर्त्सनाओं और जाति बहिष्कार का सामना करना पड़ा। सुखभोग उपरांत युवावस्था निकल जाने पर प्रायश्चित के भाव से मथुरा जा कर कुछ काल भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन रह कर काशी आ कर 'गंगालहरी' की रचना की। मुसलमान स्त्री रखने के कारण काशी के पंडितों से बहिष्कार उनसे सहन न हुआ। वे सपत्नीक गंगा तट पर जा बैठे और गंगालहरी पाठ से मैय्या का स्तवन करने लगे। गंगा प्रसन्न होकर प्रत्येक श्लोक के पाठ के साथ एक एक पग बढ़ने लगीं और 52वा श्लोक पढ़ते पढ़ते 52 पग बढ़ कर पति-पत्नि दोनों को आत्मसात् कर लिया। अब कितने ही लोग गंगालहरी का नित्य पाठ करते हैं. ज्येष्ठ में गंगा दशमी तक के दस दिनों तक तो देवालयों में और गंगातट पर इसके पाठ का विशेष महत्व है।

गंगालहरी (पं॰ श्री जगन्नाथ मिश्र कृत)
अनुवाद हरिगीतिका छंद मे:- सुरेश चौधरी 'इंदु' द्वारा

समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायाः किमपि तत्-
महैश्वर्यं लीला जनित जगतः खण्डपरशोः ।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ मूर्तं सुमनसां
सुधासौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु॥१॥

हे माँ धरा ये शिव महेश्वर जनित लीला सार की
सौभाग्य से सम्पूर्ण श्रुति के तत्व सुमन अपार की
सौंदर्य अद्भुत जल सुधा सा सलिल पा/वन धार मे
करता अमंगल शमन कष्टों को हरे संसार में |1|

दरिद्राणां दैन्यं दुरितमथ दुर्वासनहृदाम्
द्रुतं दूरीकुर्वन् सकृदपि गतो दृष्टिसरणिम् ।
अपि द्रागाविद्याद्रुमदलन दीक्षागुरुरिह
प्रवाहस्ते वारां श्रियमयमऽपारां दिशतु नः॥२॥

दुर्वासनाएं हृदय की तो दृष्टि पा माँ दूर हों
माँ दीनता भी शीघ्र भागे आपसे मजबूर हो
द्रुमदल अविद्या राग के हो नष्ट वारि प्रवाह से
मिल जाय श्रेयस अतुलनीय अपार दीक्षा ग्राह से |2|

उदञ्चन्मार्तण्ड स्फुट कपट हेरम्ब जननी
कटाक्ष व्याक्षेप क्षण जनितसंक्षोभनिवहाः ।
भवन्तु त्वंगतो हरशिरसि गङ्गातनुभुवः
तरङ्गाः प्रोत्तुङ्गा दुरितभव भङ्गाय भवताम्॥३॥

मार्तंड बालक सा कटाक्षी दृष्टि पा हैरान है
गणपति जननि का शिव जटाओं बद्ध गंगा मान है
संक्षोभित तरंगे कठिन उत्ताल सी मंगल करे
अघयुक्त माता भंगकारी भुवनभय निर्बल करे |3|

तवालम्बादम्ब स्फुरद्ऽलघुगर्वेण सहसा
मया सर्वेऽवज्ञा सरणिमथ नीताः सुरगणाः ।
इदानीमौदास्यं भजसि यदि भागीरथि तदा
निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिह पुरः॥४॥

अवलंब के आश्रय सदा गर्वित रहा मैं आपका
अति गर्व कर की है अवज्ञा अन्य देवों की सदा
निर्लिप्त हैं माँ आप मुझसे अगर बिन आधार तो
रोना कहाँ रोऊँ बताएं आप ही यह सार तो |4|

स्मृतिं याता पुंसामकृतसुकृतानामपि च या
हरत्यन्तस्तन्द्रां तिमिरमिव चण्डांशु सरणिः ।
इयं सा ते मूर्तिः सकलसुरसंसेव्यसलिला
ममान्तःसन्तापं त्रिविधमपि पापं च हरताम्॥५॥

सूरज प्रभा से नाश हो मैया उपस्थित तम सदा
तेरे स्मरण से पापियों तक को न आती आपदा
हो शमन कुंठा दिव्य आत्मा अभिलषित संताप भी
सानिध्य पा पावन सलिल जल से त्रिविध ये पाप भी |5|

अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा

विलोलद्वानीरं तव जननि तीरं श्रितवताम् ।
सुधातः स्वादीयः सलिलभरमातृप्ति पिबताम्
जनानामानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम्॥६॥

साम्राज्य   त्यागे तुल्य तृण से वो बड़े ही धीर हे
तट आपका आश्रय बना है तृण विलोलित नीर है
आतृप्त अमृत के पान का आनंद की तुलना करे
निर्वाण पद तुलना बनी है हेय पर हित ना भरे |6|

प्रभाते स्नान्तीनां नृपति रमणीनां कुचतटी-
गतो यावन् मातः मिलति तव तोयैर्मृगमदः ।
मृगास्तावद्वैमानिक शतसहस्रैः परिवृता
विशन्ति स्वच्छन्दं विमल वपुषो नन्दनवनम्॥७॥

राजमहिषी के वक्ष कस्तूरी लिपटे स्नान में
मृगमद रहे जल स्वतः अर्पित पुण्य के प्रस्थान मे
वे मृग अनायास परिवृत शत शत विमानों से रहें
पाकर अलौकिक रूप नंदन वन भ्रमण स्वच्छंद वे |7|

स्मृतं सद्यः स्वान्तं विरचयति शान्तं सकृदपि
प्रगीतं यत्पापं झटिति भवतापं च हरति ।
इदं तद्गङ्गेति श्रवण रमणीयं खलु पदम्
मम प्राण प्रान्तः वदन कमलान्तर्विलसतु॥८॥

करते स्मरण ही सद्य शांत प्रगीत सा मन हो यदा
अविलम्ब हरती ताप भव का गान कर ने से सदा
गंगा श्रवण से मात्र मेरे कमल वन मन खिल रहे
प्राणान्त तक मुख में विलासे नाम गंगा का बहे।8।

यदन्तः खेलन्तो बहुलतर सन्तोष भरिता
न काका नाकाधीश्वर नगर साकाङ्क्ष मनसः ।
निवासाल्लोकानां जनि मरण शोकापहरणम्
तदेतत्ते तीरं श्रम शमन धीरं भवतु नः॥९॥

संतोष से भर काग तक आ खेलते सानिध्य में
अब स्वर्ग की भी कामना उन्हें नहीं हैं चिन्त्य में
तट आपके रह जन्म मरण शोक का होता हरण
नैकट्य इसका श्रम हरे निष्ठा करे विपदा क्षरण ।9।

न यत्साक्षाद्वेदैरपि गलितभेदैरवसितम्
न यस्मिञ्जीवानां प्रसरति मनोवागवसरः ।
निराकारं नित्यं निजमहिम निर्वासित तमो-
विशुद्धं यत्तत्वं सुरतटि नि तत्त्वं न विषयः॥१०॥

दिव्या निराकारी तमोहारी विशुद्धत तत्व हो
तू नित्य जीवों से परे वाणी अगोचर सत्व हो
सब भेद को तू पार कर साक्षात वेदों सी सजे
गंगा निरूपण आपका कोई नहीं है कर सके।

महादानैः ध्यानैर्बहुविध वितानैरपि च यत्
न लभ्यं घोराभिः सुविमल तपोराजिभिरपि ।
अचिन्त्यं तद्विष्णोःपदमखिल साधारणतया
ददाना केनासि त्वमिह तुलनीया कथय नः॥११॥

बहु विध मिला बलिदान ध्यान सुदान त्यागव्याप्त है
हाँ घोर तापों से अचिन्त्य विष्णु पद भी प्राप्त है
हाँ सहजता से आपको माँ दे रही क्या सोचना
किससे करें तुलना भला गंगा हमे ना बोलना ।11।

नृणामीक्षामात्रादपि परिहरन्त्या भवभयम्
शिवायास्ते मूर्तेः क इह महिमानं निगदतु ।
अमर्षम्लानायाः परममनुरोधं गिरिभुवो
विहाय श्रीकण्ठः शिरसि नियतं धारयति याम्॥१२॥

माँ आपकी दर्शन कृपा भवभय से निर्भय आ करे
आ कौन ऐसी महिमा प्रशस्ति आपकी मैया करे
माँ पार्वती है आपसे अम्लान सी अम्हर्ष रखे
गंगा सदाशिव माथ धारे भूल उनको हरखे |12|

विनिन्द्यान्युन्मत्तैरपि च परिहार्याणि पतितैः
अवाच्यानि व्रात्यैः सपुलकमपास्यानि पिशुनैः ।
हरन्ती लोकानामनवरतमेनांसि कियताम्
कदाप्यश्रान्ता त्वं जगति पुनरेका विजयसे॥१३॥

माँ निंदितों से निंदनिय तू पापियों को तारती
पतितों घृणित नीचों सभी जो त्याज्य को पुचकारती
आश्रय निरंतर श्रम न खोकर विश्व मे देती सदा
इकमात्र हो जय मान मात सदैव तू रहती यदा ||१३||

स्खलन्ती स्वर्लोकादवनितलशोकापहृतये
जटाजूटग्रन्थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा ।
अये निर्लोभानामपि मनसि लोभं जनयताम्
गुणानामेवायं तव जननि दोषः परिणतः॥१४॥

माँ शोक ग्रस्तों को तराने दिव्य महि से उतरती
है दृश्य निर्लोभी जटा शिव ग्रन्थि में आबद्ध सी
मानो स्वयं में लोभ के दोषों को व आरोपित करे
आरोप ले महिमा यहाँ शिव आपकी निरुपित करे।14।

जडानन्धान्पङ्गून् प्रकृतिबधिरानुक्तिविकलान्
ग्रहग्रस्तानस्ताखिलदुरितनिस्तारसरणीन् ।
निलिम्पैर्निर्मुक्तानपि च निरयान्तर्निपततो
नरानम्ब त्रातुं त्वमिह परमं भेषजमसि॥१५॥

जड़ बधिर अंधा पंगु गूंगा औ ग्रहों से ग्रसित हैं
निस्तार का कोई दिखे ना मार्ग तो माँ प्रथित है
जो देवता द्वारा परित्यक्त नरकगामी आज हैं
बन परम औषधि पाप से उद्धार करती मात है ।15।

स्वभावस्वच्छानां सहजशिशिराणामयमपाम्
अपारस्ते मातर्जयति महिमा कोऽपि जगति ।
मुदा यं गायन्ति द्युतलमनवद्यद्युतिभृतः
समासाद्याद्यापि स्पुटपुलकसान्द्राः सगरजाः॥१६॥

माँ स्वच्छ शीतल जल जयति महिमा बहुत है जान लो
ले निष्कलंका कीर्ति उतरी स्वर्ग से माँ आप हो
महिमा कहे पुलकित सभी आ गान करते मुक्त है
बेटे सगर के आज भी रोमावली से युक्त हैं ।16।

कृतक्षुद्रैनस्कानथ झटिति सन्तप्तमनसः

समुद्धर्तुं सन्ति त्रिभुवनतले तीर्थनिवहाः ।
अपि प्रायश्चित्तप्रसरणपथातीतचरितान्
नरान् दूरीकर्तुं त्वमिव जननि त्वं विजयसे॥१७॥

हैं पाप छोटे तो धुलें नद तीर्थ में गोते लगा
हैं विश्व में बहुत पवित्र पावन तीर्थ ऐसे ही जहाँ
पापी अधर्म जो घोर हैं उद्धार कैसे हो बता
हो मात्र मैया आ अकेली तारती दे पात्रता ।17।

निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदाम्
प्रधानं तीर्थानाममलपरिधानं त्रिजगतः।
समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियाम्
श्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः॥१८॥

सब धर्म का तात्पर्य है नवल प्रसन्नता की विधा
त्रिभुवन पवित के तीर्थ में कुविचार की दे सुसमिधा
माँ बुद्धि प्रादाता तुम्हीं भंडार हो ऐश्वर्य से
हो शमन तापों का वपु से आपके इस धैर्य से।18।

पुरो धावं धावं द्रविण मदिरा घूर्णित दृशाम्
महीपानां नाना तरुणतर खेदस्य नियतम् ।
ममैवायं मन्तुः स्वहित शत हन्तुर्जडधियो
वियोगस्ते मातः यदिह करुणातः क्षणमपि॥१९॥

मद उन्मत्त से शासकों के सामने करते हुए
चटुकारिता मुझमे समाये हैं विकार डरे हुए
जड़ बुद्धि हो मैं ही स्वयं हितनाश करता हूँ सदा
क्षण के लिए करुणा वियोगा भूल गया हूँ यथा।19।

मरुल्लीला लोलल्लहरि लुलिताम्भोज पटली-
स्खलत्पां-सुव्रातच्छुरण विसरत्कौंकुम रुचि ।
सुर स्त्री वक्षोज क्षरद् अगरु जम्बाल जटिलम्
जलं ते जम्बालं मम जनन जालं जरयतु॥२०॥

हे मात जल ये आपका तो जन्म मृत्यु निवार दे
झोंके पवन के डोलित करे पतित केशर झार दे
केशर क्षरित है वक्ष से सुर नारियों का तारता
अगरू प्रगाढ़ित केसरी जल यह मुझे उद्धारता ।20।

समुत्पत्तिः पद्मारमण पद पद्मामल नखात्
निवासः कन्दर्प प्रतिभट जटाजूट भवने ।
अथायं व्यासङ्गो हतपतित निस्तारण विधौ
न कस्मादुत्कर्षस्तव जननि जागर्तु जगतः॥२१॥

लक्ष्मी रमण पदपङ्कजों के अमल नख से निःसृता
शम्भू महाशिव की जटा में वासिनी माँ संहता
दुःखी पतित उद्धार में है निरत माँ हर आपदा
जाग्रति जगत की और उन्नति आप करती हैं सदा ।21।

नगेभ्यो यान्तीनां कथय तटिनीनां कतमया
पुराणां संहर्तुः सुरधुनि कपर्दोऽधिरुरुहे ।
कया च श्रीभर्तुः पद कमलमक्षालि सलिलैः**d**
तुलालेशो यस्यां तव जननि दीयेत कविभिः॥२२॥

देवसरिता नद कौन सी निकली हिमालय से यहाँ
त्रिपुरारि मस्तक पे चढ़ी अलकों लिपट प्रकटी यहाँ
जिसने रमा पति के चरण प्रक्षालित किये कौन वो
तुलना करे कैसे सुकवि कोई जरा है मौन वो ।22।

विधत्तां निःशङ्कं निरवधि समाधिं विधिरहो
सुखं शेषे शेतां हरिः अविरतं नृत्यतु हरः ।
कृतं प्रायश्चित्तैरलमथ तपोदानयजनैः
सवित्री कामानां यदि जगति जागर्ति भवती॥२३॥

माँ आप जागृत हो करो जब कामना सम्पूर्ण तो
सुख विष्णु शेषशयन करें चाहे अविरत शिव पूर्ण हो
ब्रह्मा निरवधि समाधि में जाएं भले तप कार्य हो
आवश्यक न यज्ञादि प्रायश्चित क्रिया अनिवार्य हो ।23।

अनाथः स्नेहार्द्रां विगलितगतिः पुण्यगतिदाम्
पतन् विश्वोद्भर्त्रीं गदविदलितः सिद्धभिषजम् ।
सुधासिन्धुं तृष्णाऽकुलितहृदयो मातरमयम्
शिशुः संप्राप्तस्त्वामहमिह विदध्याः समुचितम्॥२४॥

पथ भ्रष्ट मैं था बेसहारा स्नेह आद्रा दायनी
माँ पुण्यगति दात्री पतित अभ्यूदयीय प्रदायनी
सिद्धोषधी दे रुग्ण की हो अमृत सागर रूप तू
मैं बाल बन आया समक्ष करो उचित अनुरूप तू ।24।

विलीनो वै वैवस्वतनगर कोलाहल भरः
गता दूता दूरं क्वचिदपि परेतान् मृगयितुम् ।
विमानानां व्रातो विदलयति वीथीर्दिविषदाम्
कथा ते कल्याणी यदवधि महीमण्डलमगात्॥२५॥

शुभ श्री शुभे जबसे कथा यह आपकी आयी मही
तब से पुरी यम की हुई है शांत शव मिलते नही
शव मृतक के दूरों तलक यम दूत जाएं खोजने
माँ दिव्य नगरगली लगी है घरघराहट बोलने ।25।

स्फुरत्काम क्रोध प्रबलतर सञ्जातजटिल-
ज्वरज्वाला जाल ज्वलित वपुषां नः प्रति दिनम् ।
हरन्तां सन्तापं कमपि मरुदुल्लासलहरी-
छटाश्चञ्चत्पाथः,कणसरणयो दिव्यसरितः॥२६॥

हे दिव्य सरिता उल्लसित मारुत करें इस नीर को
विसरित लहर के अम्बु कण से दग्ध तन आ शीत हों
क्रोधाग्नि की कामाग्नि की ज्वाला प्रबल है तन रही
वर्णन करी ना जा सके वे ताप भी हो दूर ही ।26।

इदं हि ब्रह्माण्डं सकल भुवनाभोगभवनम्
तरङ्गैर्यस्यान्तर्लुठति परितस्तिन्दुकमिव ।
स एष श्रीकण्ठ प्रवितत जटाजूट जटिलः
जलानां सङ्घातस्तव जननि तापं हरतु नः॥२७॥

माँ आपका जल ताप हारी सम हमारे इंदु हो
ब्रह्मांड पूरा मग्न जल करने चला ज्यूँ तेंदु हो
शिव की जटा के जाल में आबद्ध हो धारा रुकी
जल बिंदु वे आ ताप मेरे काटती करती सुखी ।27।

त्रपन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ
करं कर्णे कुर्वन्त्यपि किल कपालिप्रभृतयः ।
इमं तं मामम्ब त्वमियमनुकम्पार्द्रहृदये
पुनाना सर्वेषां अघमथन दर्पं दलयसि॥२८॥

माँ तारने में हार शिव ने मान ली मुझ पतित को
सब तीर्थ भी लज्जित हुए असमर्थ बनते व्यथित हो
कर आप अनुकम्पा दयाद्री माँ पाप मेरे तार दे
माँ पाप हारी तारकों के दर्प तोड़े आपने ।28।

श्वपाकानां व्रातैरमितविचिकित्साविचलितैः
विमुक्तानामेकं किल सदनमेनः परिषदाम् ।
अहो मामुद्धर्तुं जननि घटयन्त्याः परिकरम्
तव श्लाघाँ कर्तुं कथमिव समर्थो नरपशुः॥२९॥

मैं तो निराशा से भरा चांडाल से भी त्यक्त हूँ
भंडार हूँ मैं पाप का उद्धार का अनुरक्त हूँ
मैं वन्दना किस विध करूँ पापी घना माँ जाह्नवी
मैं जानवर सामर्थ्य मुझमे है नहीं माँ शाम्भवी।29।

न कोऽप्येतावन्तं खलु समयमारभ्य मिलितो
मदुद्धारादाराद्भवति जगतो विस्मयभरः ।
इतीमामीहां ते मनसि चिरकालं स्थितवतीम्
अयं संप्राप्तोऽहं सफलयितुमम्ब प्रथमतः॥३०॥

हाँ सोचती थी आप कोई हो पतित ऐसा यहाॅ
सम्पूर्ण जग हो चकित जब उद्धार हो उसका वहाँ
पूरी हुई इच्छा मिला पापी यहां मैं तारने
मैं व्यक्ति पेहला बन मिला ढूंढा जभी था आपने।30।

श्ववृत्तिव्यासङ्गो नियतमथ मिथ्याप्रलपनम्
कुतर्केष्वभ्यासः सततपरपैशून्यमननम् ।
अपि श्रावं श्रावं मम तु पुनरेवं गुणगणान्
ऋते त्वां को नाम क्षणमपि निरीक्षेत वदनम् ॥ ३१ ॥

मैं तो कुतर्की की तरह हर समय निंदा में जिया
मिथ्या प्रलापों में रहा मैं श्वान वत जीवन लिया
इन अवगुणों को देख कर भी कौन चाहे है मुझे
माँ आप ही तो मात्र हो क्षण भर नहीं छोड़े मुझे।31।

विशालाभ्यामाभ्यां किमिह नयनाभ्यां खलु फलम्
न याभ्यामालीढा परमरमणीया तव तनुः ।
अयं हि न्यक्कारो जननि मनुजस्य श्रवणयोः
ययोर्नान्तर्यातस्तव लहरिलीलाकलकलः ॥ ३२ ॥

अत्यंत आभा युक्त वृहद व्यक्ति कोई भी रहे
वो नेत्र उसके व्यर्थ हैं रमणीय रूप न जो सहे
धिक मनुज कानों को सुनें कलकल लहर को जो नहीं
कर श्रवण लीला लहर आनंदित हुआ हो जो नहीं ।32।

विमानैः स्वच्छन्दं सुरपुरमयन्ते सुकृतिनः
पतन्ति द्राक्पापा जननि नरकान्तः परवशाः ।
विभागोऽयं तस्मिन्नुभयविध मूर्तिः जनपदे
न यत्र त्वं लीला शमित मनुजाशेषकलुषा ॥ ३३ ॥

है दुनिया की रीत जो हैं हीन माँ हो या तर्क में
वे पुण्यशाली जाय सुरपुर पाप कर्मी नर्क में
लीलास्थली जो आपकी उसमे नहीं ये श्रापका
कोई कलुष बचता नहीं सानिध्य पा माँ आपका।33।

अपि घ्नन्तो विप्रानविरतमुषन्तो गुरुसतीः

पिबन्तो मैरेयं पुनरपि हरन्तश्च कनकम् ।
विहाय त्वय्यन्ते तनुमतनुदानाध्वरजुषाम्
उपर्यम्ब क्रीडन्त्यखिलसुरसंभावितपदाः॥३४॥

हत्या ब्रह्म की, गुरुतिय गमन, मद सेवन कनक चौर्य में
करते जघन्य पाप फिर भी आपके सानिध्य में
कर देह त्याग सन्निधि में बलि दान कर्मों को करे
स्वर्गादि से ऊंचे पदों को प्राप्त कर सम्मान वरें ।34।

अलभ्यं सौरभ्यं हरति सततं यः सुमनसाम्
क्षणादेव प्राणानपि विरह शस्त्रक्षत भृताम् ।
त्वदीयानां लीलाचलित लहरीणां व्यतिकरात्
पुनीते सोऽपि द्रागहह पवमानस्त्रिभुवनम्॥३५॥

सुरभित बयारें तो पुष्प से संसर्ग पा पीड़ा भरें
अवियोग शस्त्राघात पीड़ित प्राण माँ क्षण में हरें
अठखेलियां करती लहर से स्पर्श करता है प्राण जो
तत्क्षण त्रिभुवनी पावनी हो जायगा कल्याण हो ।35।

कियन्तः सन्त्येके नियतमिह लोकार्थघटकाः
परे पूतात्मानः कति च परलोकप्रणयिनः ।
सुखं शेते मातस्तव खलु कृपातः पुनरयम्
जगन्नाथः शश्वत्त्वयि निहितलोकत्रयभरः॥३६॥

सामान्य जन कल्याण कारी कौन जो तत्पर रहे
कितनी रही हैं पूण्य आत्मा लोक अभिलाषा करे
ये आपकी करुणा सदा शाश्वत त्रिभुवनीं तारते
निश्चिंत हो सुख से रहे सो जग्गनाथ निहारते ।36।

भवत्या हि व्रात्याऽधम पतित पाषण्डपरिषत्
परित्राणस्नेहः श्लथयितुमशक्यः खलु यथा ।
ममाप्येवं प्रेमा दुरितनिवहेष्वम्ब जगति
स्वभावोऽयं सर्वैरपि खलु यतो दुष्परिहरः॥३७॥

व्रत छोड़ती माता नहीं कल्याण के प्रासार का
पापी पतित मूरख अधम पाखण्डि के उद्धार का
दुष्कर्म त्यागूँ किस तरह मैं हूँ अधम जग जानता
कोई स्वभाव न त्याग करता यह जगत है मानता ।37।

प्रदोषान्तर्नृत्यत्पुरमथनलीलोद्धृतजटा-
तटाभोगप्रेङ्खल्लहरिभुजसन्तानविधुतिः ।
गलक्रोड क्रीडज्जल डमरु टङ्कार सुभगः
तिरोधत्तां तापं त्रिदश तटिनी ताण्डव विधिः॥३८॥

शिव सांध्य तांडव जब करें तब झूलती उनकी जटा
आबद्ध होकर वारि डमरू नाद सा क्रीड़ा अटा
हरकण्ठ को गंगा लगाती ज्यूँ स्वयं तांडव कर
माँ नृत्य करता नीर मेरे सकल पाप शमन करे ।38।

सदैव त्वय्येवार्पित कुशल चिन्ताभरमिमं
यदि त्वं मामम्ब त्यजसि समयेऽस्मिन् सुविषमे ।
तदा विश्वासोऽयं त्रिभुवन तलादस्तमयते
निराधारा चेयं भवति निर्व्याजकरुणा॥३९॥

माँ कुशलता का भार सारा चिन्त्य छोड़ा आप पे
ऐसी अवस्था के समय में आप त्यागें श्राप दे

ऐसा करोगी तो भुवन में इस अहैतुकि सार से
उठ जायगा विश्वास माँ करुणा सहित इस प्यार से।39।

कपर्दादुल्लस्य प्रणयमिलदर्धाङ्गयुवतेः
मुरारेः प्रेङ्खन्त्यो मृदुलतर सीमन्त सरणौ ।
भवान्या सापत्न्या स्फुरितनयनं कोमलरुचा
करेणाक्षिप्तास्ते जननि विजयन्तां लहरयः॥४०॥

भगवान शिव हैं अर्ध नारीश्वर जटाओं से बहा
माँ लहर का जल आपका कुछ झुंझलाहट से हटा
माँ पार्वती ने स्वयं अपने कर कमल से ही इसे
हो धन्य लहरें विजयशाली आपकी छू ले जिसे ।40

प्रपद्यन्ते लोकाः कति न भवतीमत्रभवतीम्
उपाधिस्तत्रायं स्फुरति यदभीष्टं वितरसि ।
अये तुभ्यं मातर्मम तु पुनरात्मा सुरधुनि
स्वभावादेव त्वय्यमितमनुरागं विधृतवान्॥४१॥

आश्रय अभीष्ट कि पूर्ति हो तो आपका ले लोग भी
अनगिन असंख्य महान आ करते सदा उपयोग भी
माँ मैं स्वभाविक रूप से हूँ आपका स्नेही रहा
है प्रश्न मेरा माँ जहाँ तक अमित अनुरागी सदा।

ललाटे या लोकैरिह खलु सलीलं तिलकिता
तमो हन्तुं धत्ते तरुणतरमार्तण्डतुलनाम् ।
विलुम्पन्ती सद्यो विधिलिखितदुर्वर्णसरणिं
त्वदीया सा मृत्स्ना मम हरतु कृत्स्नामपि शुचम्॥४२

माँ मृत्तिका ले आपकी माथे लगा खुश हो रहा
यह तिलक शोभा दे तमोहारी अरुण रवि सा सदा
है क्योंकि विधि का लेख यह दुर्भाग्य तम का नाश हो
इस सद्य मिट्टी का यहाँ शुचिता सहित माँ वास हो ।42।

नरान्मूढांस्तत्तज्जनपदसमासक्तमनसः
हसन्तः सोल्लासं विकच कुसुम व्रातमिषतः ।
पुनानाः सौरभ्यैः सतत मलिनो नित्यमलिनान्
सखायो नः सन्तु त्रिदशतटिनीतीरतरवः॥४३॥

तट देवसरिता पर अवस्थित डोलते द्रुम पुष्प के
मानो हँसी हतभागियों पर कर रहे हैं विमुख से
अपने विषम जग में रहे आसक्त हर दम वे करें
पवित्र मलिन मधु मक्खियों को वास से वे द्रुम करें ।43।

भजन्त्येके देवान् कठिनतर सेवांस्तदपरे
वितानव्यासक्ता यमनियमारक्ताः कतिपये ।
अहं तु त्वन्नामस्मरणहितकामस्त्रिपथगे
जगज्जालं जाने जननि तृणजालेन सदृशम्॥४४॥

कोई भजे हैं देवता कोई कठिन सेवा लगे
कुछ यम नियम बलि रत रहें तपसाधते कर ध्यान वे
माता त्रिपथ की गामिनी आराम से मैं पूजता
जग जाल को तृण जाल सा अनुभूत कर मैं छूटता।44।

अविश्रान्तं जन्मावधि सुकृतकर्मार्जनकृताम्
सतां श्रेयः कर्तुं कति न कृतिनः सन्ति विबुधाः ।
निरस्तालम्बानाम.ऽकृतसुकृतानां तु भवतीम्

विनामुष्मिन् लोके न परमवलोके हितकरम्॥४५॥

जन्मा अवधि सत्कर्म के लिए सतत श्रेयस कई
सुकृती गुणी होंगे परन्तु सुकर्म वाले हैं नहीं
अवलम्ब हीनों के लिए उद्धार कोई ना करे
माँ आप ही हो मात्र आश्रय और कोई ना करे।45।

पयः पीत्वा मातस्तव सपदि यातः सहचरैः
विमूढैः संरन्तुं क्वचिदपि न विश्रान्तिमगमम् ।
इदानीमुत्सङ्गे मृदुपवनसञ्चारशिशिरे
चिरादुन्निद्रं मां सदयहृदये स्थापय चिरम्॥४६॥

जल पान करके आपका तुरन्त विमूढ़ों सा हुआ
सानिध्य पा मैं मूढ़ का विश्रांति पाई है कहाँ
हे सदय माँ मुझको सदा के लिए पावन गोद दे
विश्राम दे जीवन मिली जागृति बहुत ही मोद से।46।

बधान द्रागेव द्रढिम रमणीयं परिकरम्
किरीटे बालेन्दुं नियमय पुनः पन्नग गणैः ।
न कुर्यास्त्वं हेलामितर जनसाधारण धिया
जगन्नाथस्य अयं सुरधुनि समुद्धार समयः॥४७॥

हे दिव्य सरिता दृढ़ रमण करती कटि कसकर कसो
शिशु चंद्र के से मुकुट को तुम सर्प से स्थिर कर धरो
ये है किसी साधारण अधम मनुज का कारण नहीं
अब जगत स्वामी नाथ के उद्धार का है समय ही।47।

शरच्चन्द्रश्वेतां शशिशकल शोभाल मुकुटाम्
करैः कुम्भाम्भोजे वराभय निरासौ विदधतीम् ।
सुधासाराकाराभरणवसनां शुभ्रमकर-
स्थितां त्वां ध्यायन्त्युदयति न तेषां परिभवः॥४८॥

शिशिर शशि की ले धवलता शोभित किरिट अर्धशशि है
हाथों अभय मुद्रा कुम्भसम है कुमुद युक्त तरणि है
मैया अलंकृत हो सुधा रस रूप वसना आप तो
आरूढ़ शुभ्र मकर कभी अभ्युदय की अति श्रोत हो।48।

दरस्मित समुल्लसद्वदनकान्तिपूरामृतैः
भवज्वलन भर्जितानिशमूर्जयन्ती नरान् ।
विवेकमय चन्द्रिका चयचमत्कृतिं तन्वती
तनोतु मम शं तनोः सपदि शन्तनोरङ्गना॥४९॥

हे अंगिनी शांतनु कि तू त्रय ताप के भवजाल से
गंगा निरंतर तारती है दग्ध को निज मान से
स्मित युक्त मुख है कान्ति पूरित शीत दा ता आप हो
माँ पाप करती शमन शांति प्रदान करती आप हो।49।

मंत्रैर्मीलितमौषधैर्मुकुलितं त्रस्तं सुराणां गणैः
स्रस्तं सान्द्रसुधा रसैर्विदलितं गारुत्मतैर्ग्रावभिः ।
वीचिक्षालित कालिया हित पदे स्वर्लोक कल्लोलिनि
त्वं तापं निरयाधुना मम भवव्यालावलीढात्मनः॥५०॥

कल्लोलिनी गंगे लहर का स्पर्श तो है स्वर्ग सा
इसमे बहा कलि त्रस्त हो उद्धार आत्मा सर्ग का
भुजंग ग्रषित इस का न कोई मंत्र है औषधि नहीं
सुरसंग अमृत गरिष्ठ ना उपचार मणि गुरु भी नहीं ||५०||

द्यूते नागेन्द्रकृत्ति प्रमथगण मणिश्रेणि नन्दीन्दुमुख्यं
सर्वस्वं हारयित्वा स्वमथपुरभिदिद्राक्पणी कर्तुकामे ।
साकूतं हैमवत्या मृदुलहसितया वीक्षितायास्तवाम्ब
व्यालो लोल्लासि वल्गल्लहरि नटघटी ताण्डवं नः पुनातु॥५१॥

गण प्रमथ क्रीडा द्यूत चौसर दांव पर तो आपके
नंदी सहित सब हार शिव निज को लगा के दांव पे
ले हेमकलश अकूत जल भर नर्तकी सी प्रण करे
मृदु हास्य ले तांडव किया देखी उमा प्रोक्षण करें ||५१||

विभूषितानङ्ग रिपूत्तमाङ्गा, सद्यः कृतानेकजनार्तिभङ्गा ।
मनोहरोत्तुङ्गचलत्तरङ्गा,गङ्गा ममाङ्गान्यमली करोतु॥५२॥

अनंग रिपु शिव भाल को, करे विभूषित गंग
असंख्य जन के कष्ट को, क्षण मे करती भंग ||५२अ||
उत्तंग मनोहर बहे, उच्छल सरित तरंग
निर्मल कर दो मात तुम, मेरे समस्त अंग ||५२आ||

इमां पीयूषलहरीं जगन्नाथेन निर्मिताम् ।
यः पठेत्तस्य सर्वत्र जायन्ते सुखसम्पदः ॥ ५३॥

लहरी-पियूष लिख रहे, पण्डित श्री जगन्नाथ
मन से जो पढ़ता इसे, सुख समृद्धि हो प्राप्त ||५३||

गंगा-कुम्भ दर्शन
रचनाकार : सुरेश चौधरी 'इंदु'

गंगा की पावन तरंग
तरिणि सुता मादक उमंग
है सुप्त सरस्वती संग
अमिय बून्द गिरी थी चार। आर्य भूमि के अलंकार।
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

ये हैं अमावसी मेला
लोगों का बढ़ता रेला
हूँ भीड़ में या अकेला
देखा सनातन संस्कार। आर्य भूमि के अलंकार ।
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

ॐ नाद बम बम महेश्वर
संत अखाड़े नद तटपर
किन्नर बनते मंडलेश्वर
इस कुम्भ में पहली बार । आर्य भूमि के अलंकार ।
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

है अस्थि, मांस, शेष देह
प्राण पुण्य बल स्वर्ग नेह
विसृत प्राण चला निज गेह

शेष बचे करें चीत्कार। आर्य भूमि के अलंकार ।
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

अर्ध कुम्भ वैभव प्रणीत
देख संत ठाठ धन प्रीत
कुंठित हुए मेरे गीत
संस्कृति सुकृति जय जयकार। आर्य भूमि के अलंकार ।
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

कुम्भ महिमा अपरंपार । हे दीप्त भौम नमस्कार
ये है कुम्भ की हुंकार । ये है कुम्भ की हुंकार ।।

श्रीगङ्गाष्टकम्-आदि शंकर
अनुवाद : सुरेश चौधरी (राधेश्यामी छंद)

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि ।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे

तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ १ ॥

हे माँ गंगे तीर तुम्हारे , पान करूँ मात्र जल तुम्हारा
रहित विषय तृष्णा से हो मैं, कृष्ण की है अर्चन सहारा
हे सकल पाप विनाशनी माँ, तू है स्वर्ग की सोपान सी
तरल तरींगिणी देवि गंगे, हो कृपा प्रसन्न भगवान सी ||1||

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः-
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति ।
अमरनगरनारीचामरग्राहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ २ ॥

हे भगवति हो शिव मस्तक की, आप तो लीलामयी माला
जो जीव आपके जल कण को, अणु मात्र भी अगर छु डाला
कलंक भयकारी कलियुग का, भूल छोड़ देता भय वो जन
देव लोक की चँवर धारिणी, अप्सरा - गोद मे करे शयन ||2||

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती ।
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु ॥ ३ ॥

फोड़ ब्रह्मांड आप निकलती, शिव जटा-लता उल्लसित करती
स्वर्ग लोक से आ आ गिरती, सुमेरु शिखर-गुफा से झड़ती
लोटती धरा फटकार कड़ी, पपसमूह की सेना संगे
सागर पूरित करती मैया, पवित्र कर देव पुरी गंगे ||3||

मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम् ।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरङ्गम् ॥ ४ ॥

गज कुंभस्थल से मद मदिरा, स्नान जल से हो सुरभित झरे
सिद्धं नारी स्तन बहे कुंकुम, मिल जल से पिंगल वर्ण धरे
अर्पित मुनि कुश पुष्प तट ढका, गज जल तरंग से त्राण करे
गज शिशु सूंड भयभीत करती, यह गंगाजल कल्याण करे ||4||

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम् ।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥ ५ ॥

पापविनाशनी जह्नु कन्या, मैया भागीरथी भगवती
सबसे पहले ब्रह्म कमंडलु, से उतर आई पद रमापति
तत्पश्चात्य महादेव शिव सिरे , जटा मध्य सुशोभित कर रही
मैया गंगा मणि कंचन सा, सुंदर रूप मोहित धर रही ||5||

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी ।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी ॥ ६ ॥

हिम गिरी से उतरने वाली, तुझमे जो भी खाता गोता
मात उद्धार उसका करती, जग आपदा का नाश होता
शेष नाग अनुगामी मैया, शंभु भाल लता सी शोभती
काशी क्षेत्र प्रवाहित होती, विजयी भव जाहनवी मोहती ||6||

कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं
त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसि ।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां
तदा मातः शातक्रतवपदलभोऽप्यतिलघुः ॥ ७ ॥

तरंग आती जब दृग समक्ष, तब कहाँ टिके जगत तरंगे
जलपान आपका जो करता, वैकुंठ का वास दे गंगे
त्यागे शरीर कोई जन जब, आपकी गोद मे हे माता
इंद्रपद का तत्काल मिलना, भी तुच्छ अत्यंत लग जाता ||7||

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरुपे हरिचरणरजोहारिणी स्वर्गमार्गे ।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदधहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ८ ॥

आप सार तीनों लोकों का, सब देवांगनाएं स्नान करें
तू ऐसी विस्तृत जल वाली, ब्रह्म स्वरूपिणि कल्याण करे
स्वर्ग मार्ग मे प्रभु पद धोती, हर जल कण पाप प्रयाश्चित हो
मात त्रैलोक्य पाप नाशिनी, स्तुति समर्थ बन तू हर्षित हो ||8||

मातर्जाह्नवि शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम् ।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद्भक्तिरविच्युताहरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ९ ॥

हे शिव संगिनी मात गंगे, प्राण प्रयाण का उत्सव भरूँ
तीर तुम्हारे हाथ जोड़ कर, सिर झुका आनंद स्मरण करूँ
भगवान के चरण युगल रहे, अविचल भाव मेरे समर्पित
अभेदात्मिका नित्य भक्ति हो, हरि -हर मे आपकी प्रस्फुरित ||9||

गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ १० ॥

दोहा:
शुद्ध होय जो नर करे, श्री गङ्गाष्टक पाठ
पाप मुक्त होकर करे, वैकुंठ लोक प्राप्त ||10||

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं श्रीगङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

<u>कालिदास कृत श्री गंगाष्टकम</u>
<u>श्रीगङ्गाष्टकम् (कालिदास रचित)</u>
अनुवाद सुरेश चौधरी 'इंदु' (मत सवैया)

नमस्तेऽस्तु गङ्गे त्वदंगप्रसंगा-द्भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवांगा भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति ॥१॥

वंदन मात गंगे का करूँ, स्पर्श व्यक्ति को सरल बनाए
सर्प, अश्व, हिरण और बंदर, भले एक झुंड बना आए
स्पर्श पा मैया वे सब तरें, शिवलोक मे शिव रूप लेते
पहुँच देवलोक स्वर्ग मे तो, हरि रूप पद प्राप्त कर सेते ||1||

नमो जह्नुकन्ये न मन्ये त्वदन्यै-र्निसर्गेन्दुचिह्नादिभिर्लोकभर्तुः।
अतोऽहं नतोऽहं सदा गौरतोये वसिष्ठादिभिर्गीयमानाभिधेये ॥२॥

नमन करूँ मैं जह्नु सुता को, अंतर करूँ न मुझमे क्षमता
आप और शिव जग स्वामी में, अंतर मुझे न कोई दिखता
अनवरत वर्ष भर स्वच्छ नीर, दाता बार बार तुझे नमन
पवित्र पावन नाम आपका, वशिष्ट करें प्रसंशा वंदन ||2||

त्वदामज्जनात् सज्जनो दुर्जनो वा विमानैस्समानः समानैर्हिमानैः ।
समायाति तस्मिन् पुरारातिलोके पुरद्वारसंरुद्धदिक्पाललोके ।३॥

अच्छा हो या हो बुरा व्यक्ति, जो भी तुझमे डुबकी लगाय

सब बिना भेद भाव के यहाँ, सम्मानित हो उचित पद पाय
इस धरा पर यश कीर्ति मिलती, सीधे शिवलोक पहुँच जाते
इन्द्र दिग्पाल दसों दिशा के , स्वामी जहाँ प्रवेश न पाते ||3||

स्वरावासदंभोलिदंभोपि रंभा-परीरंभसंभावनाधीरचेताः।
समाकाङ्क्षते त्वत्तटे वृक्षवाटी-कुटीरे वसन्नेतुमायुर्द्दिनानि ॥४॥

इन्द्र को मिलता आनंद है, शायद रंभा आलिंगन मे
और गर्व है कि स्वर्ग-पति वे, वज्रायुध उनके बंधन में
वे भी सुख मांगते आपसे, रहें बढ़े तट वृक्ष छाँव मे
चाहे छोटी कुटिया ही हो, गंगा तीर के उस गाँव मे ||4||

त्रिलोकस्य भर्तुर्ज्जटाजूटबन्धात् स्वसीमन्तभागे मनाक् प्रस्खलन्तः।
भवान्या रुषा प्रौढसापत्निभावात् करेणाहतास्त्वत्तरङ्गा जयन्ति ॥५॥

त्रिलोकपति के जटाबंध से, उनके केशों का मध्य भाग
उलझ उलझ टपकती आपकी, पुनीत गंगा धारा विहाग
सा-पत्नी पार्वती कहाये, उस रोष से उत्पन्न तरंग
नमन करता उठे ज्वार को, जयति जयति जयति मैया गंग ||5||

जलोन्मज्जदैरावतोद्दामकुंभ-स्फुरत्प्रस्खलत्सान्द्रसिन्दूररागे।
क्वचित् पद्मिनीरेणुभंगप्रसंगे मनः खेलतां जह्नुकन्यातरङ्गे ॥६॥

जो रंग केशरिया घुल गया, आपमे सरोज पराग संग
एरावत मस्तक से निकला, और पैठ चला नीर गंग
और किया पीत आपका जल, घुल गजकुसुम प्रवाह धार मे
मात, मुझे क्रीडा करने दे, इस पावन जलधार ज्वार मे ||6||

भवत्तीरवानीरवातोत्थधूली-लवस्पर्शतस्तत्क्षणात्क्षीणपापः।
जनोऽयं जगत्पावने त्वत्प्रसादात् पदे पौरुहूतेऽपि धत्तेऽवहेलाम् ॥७॥

सबसे पवित्र सबसे पावन, मात जाह्नवी देवि अनुपम
पाप नाश सभी हुए मेरे, किया स्पर्श आपकी बूंद हम
वायुगति से कर योत्रा करी, विपरीत नाविक की दिशा से
देवराज के विरुद्ध भी की, यह सब है आपकी कृपा से ||7||

त्रिसन्ध्यानमल्लेखकोटीरनाना-विधानेकरत्नांशुबिंबप्रभाभिः।
स्फुरत्पादपीठे हठेनाष्टमूर्ते- र्जटाजूटवासे नताः स्मो पदं ते ॥८॥

शिव की विराट केश लता मे, प्रतिबिंबित करती सी क्रीडा
द्वि-चरण प्रभाषित आपके हैं, माणिक-प्रभा धीति की व्रीड़ा
देव भाल मुकुट कई शोभित, विराजते शिव जटा धार हैं
आपके निर्माल्य चरणों को, मेरा नमन बारम्बार है ||8||

इदं यः पठेदष्टकं जह्नुपुत्र्या-स्त्रिकालं कृतं कालिदासेन रम्यम्।
समायास्यतीन्द्रादिभिर्गीयमानं पदं शैशवं शैशवं नो लभेत् सः ॥९ ।।

कालिदास रचित गंगाष्टकं, का पठन समर्पण करता जो
मन से भोर दोपहर संध्या, तीनों समय स्मरण करता जो
उसे वैकुंठ का अध्यासन, और देवराज से प्रशंसा
मिलती रहती सदा कृपा से, बचपन की कभी न अनुशंसा ||9||

<u>बाल्मीकि ऋषि द्वारा रचित गंगाष्टकं</u>
<u>अनुवाद : सुरेश चौधरी 'इंदु' (दोहा छंद)</u>

मातः शैलसुता-सपत्नि वसुधा-शृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहण-वैजयन्ति भवतीं भागीरथीं प्रार्थये ।
त्वत्तीरे वसतः त्वदंबु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खतः
त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥ १॥

शैलसुता माँ देवि जो, पत्नि पार्वती संग
हार बनी सुंदर दिखे, इस पृथ्वी का अंग ||1अ||
स्वर्गारोहण की लता, रहूँ आपके तीर
पान करूँ जल आपका, स्नान लेहर के नीर ||1आ||
नमन करूँ मैं आपको, नित्य आपका ध्यान
अंत समय दर्शन स्मरण, इस विध निकले प्राण||1ई||

त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो परं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासंघट्टघण्टारण-
त्कारस्तत्र समस्तवैरिवनिता-लब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २॥

पाखी बनकर जन्म लूँ, निवास तट के वृक्ष
कछुआ मछली बन रहूँ, यह है नृप समकक्ष||2 अ ||
शत्रु पत्नि भी स्तुति करे, गज घंटी आह्लाद
क्रूर भीड़ गज घेरती, तट पर भय का नाद ||2आ||

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो
वाऽ- वारीणः स्यां जनन-मरण-क्लेशदुःखासहिष्णुः ।
न त्वन्यत्र प्रविरल-रणत्किङ्किणी-क्वाणमित्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥ ३॥

जन्म मृत्यु से हो परे , बनूँ अश्व या बैल
या गज पक्षी बन रहूँ, तट गंगा के फैल ||3अ||
कंगन स्वर बाला करे, झलती जब वे पंख
भूपाल अन्यत्र भला, शोभित तट बन रंक ||3आ||

काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्टितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बु-लुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।
दिव्यस्त्री-कर-चारुचामर-मरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथी स्वं वपुः ॥ ४॥

काक गीध नोचें भले, खाएं चाहे श्वान
देव नार चामर झलें, मृत शरीर कर स्नान ||4अ||
धारा तट से ले चली, लहरों मे हो बंद
माँ भागीरथी नमन, दे दर्श हो स्वछन्द||4आ||

अभिनव-बिसवल्ली-पादपद्मस्य विष्णोः
मदन-मथन-मौलेर्मालती-पुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपित-कलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥ ५॥

चरण कमल हरि वल्लरी, विजयी माते गंग
पुष्प हार बन शोभती, मन्मथ मस्तक संग ||5अ||
विजय पताका दायनी, लक्ष्मी देती मोक्ष
कलि कलंक भय नाशिनी, पवित्र करें परोक्ष ||5आ||
एतत्ताल-तमाल-साल-सरलव्यालोल-वल्लीलता-
च्छत्रं सूर्यकर-प्रतापरहितं शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम् ।
गन्धर्वामर-सिद्ध-किन्नरवधू-तुङ्गस्तनास्पालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गँ जलं निर्मलम् ॥ ६॥

लता वल्लरी से है ढका, है तरु साल तमाल्य
स्नान हेतु गंगा रहे, नित पावन निर्माल्य ||6अ||
श्वेत सूर्य, शंख, चंद्र से, गया डोल वह लोक
देव गंधर्व सिद्ध सह , किन्नर देते धोक ||6आ||

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारि-चरणच्युतम् ।
त्रिपुरारि-शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ७॥

गंगा जल मनहारि है, विष्णु चरण से च्युत
शिव भाल से निकलती, करे पाप से मुक्त ||7||

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराज-गुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपाद-रजोपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ८॥

पावन जल रक्षा करे, करे पाप जो नाश
बुरे कर्म भी दूर हो, उठती लहरें त्रास ||8 अ||
गिरि सरिता हिम कन्दरा, झे स्वर करे विदीर्ण
हरि पद धोती निकलती, चरण धूलि सी क्षीण ||8 आ|

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।
प्रक्षाल्य गात्र-कलिकल्मष-पङ्क-माशु
मोक्षं लभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥ ९॥

शुभ्र बाल्मीकि रचित पद, करता नर जो पाठ
श्री गंगाष्टक ध्यान से, जो नित पढे प्रभात ||9 अ||
कलि-कलुष रूप पंक धो, करे पाप का नाश
पाय मोक्ष भव कटे, जन्म मरण का त्रास ||9 आ|

॥ इति वाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

गंगाजल खराब क्यों नहीं होता

हिमालय की कोख गंगोत्री से निकली गंगा (भागीरथी), हरिद्वार (देवप्रयाग) में अलकनंदा से मिलती है। यहाँ तक आते-आते इसमें कुछ चट्टानें घुलती जाती हैं जिससे इसके जल में ऐसी क्षमता पैदा हो जाती है जो पानी को सड़ने नहीं देती। हर नदी के जल की अपनी जैविक संरचना होती है, जिसमें वह ख़ास तरह के घुले हुए पदार्थ रहते हैं जो कुछ क़िस्म के जीवाणु को पनपने देते हैं और कुछ को नहीं। वैज्ञानिक शोध से पता चला है कि गंगा के पानी में ऐसे जीवाणु हैं जो सड़ाने वाले कीटाणुओं को पनपने नहीं देते, इसलिए पानी लंबे समय तक ख़राब नहीं होता।

वैज्ञानिक कारण
वैज्ञानिक बताते हैं कि हरिद्वार में गोमुख- गंगोत्री से आ रही गंगा के जल की गुणवत्ता पर इसलिए कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि यह हिमालय पर्वत पर उगी हुई अनेकों जीवनदायनी उपयोगी जड़ी-बूटियों, खनिज पदार्थों और लवणों को स्पर्श करता हुआ आता है। वैज्ञानिक शोध से पता चला है कि हिमालय की कोख गंगोत्री से निकली गंगा के जल का ख़राब नहीं होने के कई वैज्ञानिक कारण भी हैं। गंगाजल में बैट्रिया फोस नामक एक बैक्टीरिया पाया गया है जो पानी के अंदर रासायनिक क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले अवांछनीय पदार्थों को खाता रहता है। इससे जल की शुद्धता बनी रहती है।
गंगा के पानी में गंधक (सल्फर) की प्रचुर मात्रा मौजूद रहती है; इसलिए भी यह ख़राब नहीं होता। इसके अतिरिक्त कुछ भू-रासायनिक क्रियाएं भी गंगाजल में होती रहती हैं, जिससे इसमें कभी कीड़े पैदा नहीं होते। यही कारण है कि यह पानी सदा पीने योग्य माना गया है। जैसे-जैसे गंगा हरिद्वार से आगे अन्य शहरों की ओर बढ़ती जाती है शहरों, नगर निगमों और खेती-बाड़ी का कूड़ा-करकट तथा औद्योगिक रसायनों का मिश्रण गंगा में डाल दिया जाता है।

वैज्ञानिको के मत एवं शोध
वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चला है कि गंगाजल से स्नान करने तथा गंगाजल को पीने से हैजा, प्लेग, मलेरिया तथा क्षय आदि रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इस बात की पुष्टि के लिए एक बार डॉ. हैकिन्स, ब्रिटिश सरकार की ओर से गंगाजल से दूर होने वाले रोगों के परीक्षण के लिए आए थे। उन्होंने गंगाजल के परिक्षण के लिए गंगाजल में हैजे (कालरा) के कीटाणु डाले गए। हैजे के कीटाणु मात्र 6 घंटे में ही मर गए और जब उन कीटाणुओं को साधारण पानी में रखा गया तो वह जीवित होकर अपने असंख्य में बढ़ गया। इस तरह देखा गया कि गंगाजल विभिन्न रोगों को दूर करने वाला जल है।
फ्रांस के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हैरेन ने गंगाजल पर वर्षों अनुसंधन करके अपने प्रयोगों का विवरण शोधपत्रों के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने आंत्र शोध व हैजे से मरे अज्ञात लोगों के शवों को गंगाजल में ऐसे स्थान पर डाल दिया, जहाँ कीटाणु तेजी से पनप सकते थे। डॉ. हैरेन को आश्चर्य हुआ कि कुछ दिनों के बाद इन शवों से आंत्र शोध व हैजे के ही नहीं बल्कि अन्य कीटाणु भी गायब हो गए। उन्होंने गंगाजल से 'बैक्टीरियोसेपफेज' नामक एक घटक निकाला, जिसमें औषधीय गुण हैं।
इंग्लैंड के जाने-माने चिकित्सक सी. ई. नेल्सन ने गंगाजल पर अन्वेषण करते हुए लिखा कि इस जल में सड़ने वाले जीवाणु ही नहीं होते। उन्होंने महर्षि चरक को उद्धृत करते हुए लिखा कि गंगाजल सही मायने में पथ्य है।
रूसी वैज्ञानिकों ने हरिद्वार एवं काशी में स्नान के उपरांत 1950 में कहा था कि उन्हें स्नान के उपरांत ही ज्ञात हो पाया कि भारतीय गंगा को इतना पवित्र क्यों मानते हैं।
गंगाजल की पाचकता के बारे में ओरियंटल इंस्टीटयूट में हस्तलिखित आलेख रखे हैं। कनाडा के मैकिलन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. एम. सी. हैमिल्टन ने गंगा की शक्ति को स्वीकारते हुए कहा कि वे नहीं जानते कि इस जल में अपूर्व गुण कहाँ से और कैसे आए। सही तो यह है कि चमत्कृत हैमिल्टन वस्तुत: समझ ही नहीं पाए कि गंगाजल की औषधीय गुणवत्ता को किस तरह प्रकट किया जाए।
आयुर्वेदाचार्य गणनाथ सेन, विदेशी यात्री इब्नबतूता वरनियर, अंग्रेज़ सेना के कैप्टन मूर, विज्ञानवेत्ता डॉ. रिचर्डसन आदि सभी ने गंगा पर शोध करके यही निष्कर्ष दिया कि यह नदी अपूर्व है।

गंगाजल में स्नान
गंगा नदी में तैरकर स्नान करने वालों को स्नान का विशेष लाभ होता है। गंगाजल अपने खनिज गुणों के कारण इतना अधिक गुणकारी होता है कि इससे अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं। गंगा नदी में स्नान करने वाले लोग स्वस्थ और रोग मुक्त बने रहते हैं। इससे शरीर शुद्ध और स्फूर्तिवान बनता है। भारतीय सभ्यता में गंगा को सबसे पवित्र नदी माना जाता है। गंगा नदी के पानी में विशेष गुण के कारण ही गंगा नदी में स्नान करने भारत के विभिन्न क्षेत्र से ही नहीं बल्कि संसार के अन्य देशों से भी लोग आते हैं। गंगा नदी में स्नान के लिए आने वाले सभी लोग विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति पाने के लिए हरिद्वार और ऋषिकेश आकर मात्र कुछ ही दिनों में केवल गंगा स्नान से पूर्ण स्वस्थ हो जाते हैं। कई विद्वानों ने गंगाजल की पवित्रता का वर्णन अपने निबन्धों में पूर्ण आत्मा से किया है। भौतिक विज्ञान के कई आचार्यो ने भी गंगाजल की अद्भुत शक्ति और प्रभाव को स्वीकार किया है।

गंगा जी का नाम जाह्नवी क्यों पडा ....
एक पौराणिक कथा :

गंगा, जाह्नवी और भागीरथी कहलानी वाली 'गंगा नदी' भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक है। यह मात्र एक जल स्रोत नहीं है, बल्कि भारतीय मान्यताओं में यह नदी पूजनीय है जिसे 'गंगा मां' अथवा 'गंगा देवी' के नाम से सम्मानित किया जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार गंगा पृथ्वी पर आने से पहले सुरलोक में रहती थी।

तो क्या कारण था जो यह पवित्र नदी धरती पर आई। इसे यहां कौन लाया? गंगा नदी के पृथ्वी लोक में आने के पीछे कई सारी लोक कथाएं प्रचलित हैं, लेकिन इस सबसे अहम एवं रोचक कथा है पुराणों में। एक पौराणिक कथा के अनुसार अति प्राचीन समय में पर्वतराज हिमालय और सुमेरु पर्वत की पुत्री मैना की अत्यंत रूपवती एवं सर्वगुण सम्पन्न दो कन्याएं थीं।
दो कन्याओं में से बड़ी थी गंगा तथा छोटी पुत्री का नाम था उमा। कहते हैं बड़ी पुत्री गंगा अत्यन्त प्रभावशाली और असाधारण दैवीय गुणों से सम्पन्न थी। लेकिन साथ ही वह किसी बन्धन को स्वीकार न करने के लिए भी जानी जाती थी। हर कार्य में अपनी मनमानी करना उसकी आदत थी।
हिमालय से बेहद ऊंचाई पर सुरलोक में रहने वाले देवताओं की दृष्टि गंगा पर पड़ी। उन्होंने उसकी असाधारण प्रतिभा को सृष्टि के कल्याण के लिए चुना और उसे अपने साथ स्वर्गलोक ले गए। अब पर्वतराज के पास एक ही कन्या शेष थी, उमा। उमा ने भगवान शिव की तपस्या की और तप पूर्ण होने पर भगवान शंकर को ही वर के रूप में मांग लिया।
इस तरह से दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ। शिव और उमा के विवाह के वर्षों बाद भी दोनों को सन्तान प्राप्ति ना हुई। एक दिन भगवान शिव के मन में सन्तान उत्पन्न करने का विचार आया। जब उनके इस विचार की सूचना सृष्टि के रचनाकर ब्रह्मा जी तक पहुंची तो उनके सहित सभी देवता चिंता में पड़ गए।
उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि महादेव जैसे अत्यंत तेजस्वी देव के सन्तान के तेज को कौन सम्भाल सकेगा? इसका जवाब उन्हें स्वयं भगवान शंकर के अलावा कोई नहीं दे सकता था। तो सभी अपनी पुकार लेकर उनके पास पहुंच गए। उनके कहने पर अग्नि ने यह भार ग्रहण किया और परिणामस्वरूप अग्नि के समान महान तेजस्वी स्वामी कार्तिकेय का जन्म हुआ।
देवताओं के इस षड़यंत्र से उमा के सन्तान होने में बाधा पड़ी तो उन्होंने क्रुद्ध होकर देवताओं को शाप दे दिया कि भविष्य में वे कभी पिता नहीं बन सकेंगे। इस बीच सुरलोक में विचरण करती हुई गंगा से उमा की भेंट हुई। गंगा ने उमा को बताया कि अब वह सुरलोक में और नहीं रहना चाहती और अपनी मातृभूमि पृथ्वी पर जाना चाहती है।
जिस पर उमा ने गंगा को आश्वासन दिया कि वे भविष्य में उसकी इस प्रार्थना का कोई ना कोई समाधान अवश्य निकालेंगी। यहीं से गंगा के पृथ्वी पर आने की कथा का एक नया अध्याय शुरू होता है जो कि भगवान राम की नगरी अयोध्या से जुड़ा है जिसे पुराणों में अयोध्यापुरी के नाम से जाना जाता था।
वहां सगर नाम के एक राजा थे जिनकी कोई सन्तान नहीं थी। सगर राजा की दो रानियां थी - केशिनी तथा सुमति, किन्तु दोनों से ही राजा को पुत्र की उत्पत्ति नहीं हो रही थी। जिसके फलस्वरूप उन्होंने दोनों पत्नियों को साथ लेकर हिमालय के भृगुप्रस्रवण नामक प्रान्त में तपस्या करने का फैसला किया।
एक लंबी तपस्या के बाद महर्षि भृगु राजा और उनकी पत्नियों से प्रसन्न हुए और वरदान देने के लिए प्रकट हुए। उन्होंने कहा, "हे राजन! तुम्हारी तपस्या से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं और तुम्हारी दोनों पत्नियों को पुत्र का वरदान देता हूं। लेकिन दोनों में से एक पत्नी को केवल एक पुत्र की प्राप्ति होगी, जो वंश को आगे बढ़ाने में सहायक साबित होगा। तथा दूसरी पत्नी को 60 हज़ार पुत्रों का वर हासिल होगा। अब तुम यह फैसला कर लो कि किसे कौन सा वरदान चाहिए।"
इस पर राजा की पहली पत्नी केशिनी ने वंश को बढ़ाने वाले एक पुत्र की कामना की और रानी सुमति ने साठ हजार बलवान पुत्रों की। उचित समय पर रानी केशिनी ने असमंजस नामक पुत्र को जन्म दिया। दूसरी ओर रानी सुमति के गर्भ से एक तूंबा निकला जिसे फोड़ने पर कई सारे छोटे-छोटे पुत्र निकले, जिनकी संख्या साठ हजार थी। उन सबका पालन पोषण घी के घड़ों में रखकर किया गया।
समय बीतने पर सभी पुत्र बड़े हो गए। महाराज सगर का ज्येष्ठ एवं वंश को आगे बढ़ाने वाला पुत्र असमंजस बड़ा दुराचारी था। उसके कहर से सारी प्रजा परेशान थी, इसीलिए परिणामस्वरूप राजा ने उसे नगर से बाहर कर दिया। कुछ समय बाद असमंजस के यहां अंशुमान नाम का एक पुत्र हुआ। वह अपने पिता से बिल्कुल विपरीत स्वभाव का था।
अंशुमान अत्यंत सदाचारी, पराक्रमी एवं लोगों की सहायता करने वाला था। एक दिन राजा सगर ने महान अश्वमेघ यज्ञ करवाने का फैसला किया जिसके लिए उन्होंने हिमालय एवं विन्ध्याचल के बीच की हरी भरी भूमि को चुना और वहां एक विशाल यज्ञ मण्डप का निर्माण करवाया। इसके बाद अश्वमेघ यज्ञ के लिए श्यामकर्ण घोड़ा छोड़कर उसकी रक्षा के लिये पराक्रमी अंशुमान को सेना के साथ उसके पीछे पीछे भेज दिया।
यज्ञ सफलतापूर्वक बढ़ रहा था जिसे देख इन्द्र देव काफी भयभीत हो गए। तभी उन्होंने एक राक्षस का रूप धारण किया और हिमालय पर पहुंचकर राजा सगर के उस घोड़े को चुरा लिया। घोड़े की चोरी की सूचना पाते ही राजा सगर के होश उड़ गए। उन्होंने शीघ्र ही अपने साठ हजार पुत्रों को आदेश दिया कि घोड़ा चुराने वाले को किसी भी अवस्था (जीवित या मृत) में पकड़कर लेकर आओ।
आदेश सुनते ही सभी पुत्र खोजबीन में लग गए। जब पूरी पृथ्वी खोजने पर भी घोड़ा नहीं मिला तो उन्होंने पृथ्वी को खोदना शुरू कर दिया, यह सोच कर कि शायद पाताल लोक में उन्हें घोड़ा मिल जाए। अब पाताल में घोड़े को खोजते खोजते वे सनातन वसुदेव कपिल के आश्रम में पहुंच गए।
वहां उन्होंने देखा कि कपिलमुनि आंखें बन्द किए बैठे हैं और ठीक उनके पास यज्ञ का वह घोड़ा बंधा हुआ है जिसे वह लंबे समय से खोज रहे थे। इस पर सभी मंदबुद्धि पुत्र क्रोध में कपिल मुनि को घोड़े का चोर समझकर उन्हें अपशब्द कहने लगे। उनके इस कुकृत्यों से कपिल मुनि की समाधि भंग हो गई। आंखें खुलती ही उन्होंने क्रोध में सभी राजकुमारों को अपने तेज से भस्म कर दिया। लेकिन इसकी सूचना राजा सगर को नहीं थी।
जब लंबा समय बीत गया तो राजा फिर से चिंतित हो गए। अब उन्होंने अपने तेजस्वी पौत्र अंशुमान को अपने पुत्रों तथा घोड़े का पता लगाने के लिए आदेश दिया। आज्ञा का पालन करते हुए अंशुमान उस रास्ते पर निकल पड़ा जो रास्ता उसके चाचाओं ने बनाया था। मार्ग में उसे जो भी पूजनीय ऋषि मुनि मिलते वह उनका सम्मानिपूर्वक आदर-सत्कार करता। खोजते-खोजते वह कपिल आश्रम में जा पहुंचा।
वहां का दृश्य देख वह बेहद आश्चर्यचकित हुआ। उसने देखा कि भूमि पर उसके साठ हजार चाचाओं के भस्म हुए शरीरों की राख पड़ी थी और पास ही यज्ञ का घोड़ा चर रहा था। यह देख वह निराश हो गया। अब उसने राख को विधिपूर्वक प्रवाह करने के लिए जलाशय खोजने की कोशिश की लेकिन उसे कुछ ना मिला। तभी उसकी नजर अपने चाचाओं के मामा गरुड़ पर पड़ी।
उसने गरुड़ से सहायता मांगी तो उन्होंने उसे बताया कि किस प्रकार से कपिल मुनि द्वारा उसके चाचाओं को भस्म किया गया। वह आगे बोले कि उसके चाचाओं की मृत्यु कोई साधारण नहीं थी इसीलिए उनका तर्पण करने के लिए कोई भी साधारण सरोवर या जलाशय काफी नहीं होगा। इसके लिए तो केवल हिमालय की ज्येष्ठ पुत्री गंगा के जल से ही तर्पण करना सही माना जाएगा।
गरुड़ द्वारा राय मिलने पर अंशुमान घोड़े को लेकर वापस अयोध्या पहुंचा और राजा सगर को सारा वाकया बताया। राजा काफी दुखी हुए लेकिन अपने पुत्रों का उद्धार करने के लिए उन्होंने गंगा को पृथ्वी पर लाने का फैसला किया लेकिन यह सब होगा कैसे, उन्हें समझ नहीं आया। कुछ समय पश्चात् महाराज सगर का देहान्त हो गया जिसके बाद अंशुमान को राजगद्दी पर बैठाया गया।
आगे चलकर अंशुमान को दिलीप नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। उसके बड़े होने पर अंशुमान ने उसे राज्य सौंप दिया और स्वयं हिमालय की गोद में जाकर गंगा को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करने लगे। उनके लगातार परिश्रम के बाद भी उसे सफलता हासिल ना हुई और कुछ समय बाद अंशुमान का देहान्त हो गया। अंशुमान की तरह ही उसके पुत्र दिलीप ने भी राज्य अपने पुत्र भगीरथ को सौंपकर गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए तपस्या शुरू कर दी।
लेकिन उन्हें भी कोई फल हासिल ना हुआ। दिलीप के बाद भगीरथ ने भी गंगा तपस्या का फैसला किया लेकिन उनकी कोई संतान ना होने के कारण उन्होंने राज्य का भार मन्त्रियों को सौंपकर हिमालय जाने का फैसला किया। उनकी कठोर तपस्या से आखिरकार भगवान ब्रह्मा प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हुए और मनोवांछित फल मांगने के लिए कहा।
भगीरथ ने ब्रह्मा जी से कहा, "हे प्रभु! मैं आपके दर्शन से अत्यंत प्रसन्न हूं। कृपया आप मुझे सगर के पुत्रों का उद्धार करने के लिए गंगा का जल प्रदान कर दीजिए तथा साथ ही मुझे एक सन्तान भी दें ताकि इक्ष्वाकु वंश नष्ट न हो जाए।" भगीरथ की प्रार्थना सुन ब्रह्मा जी मुस्कुराए और बोले, "हे वत्स! मेरे आशीर्वाद से जल्द ही तुम्हारे यहां एक पुत्र होगा किन्तु तुम्हारी पहली मांग गंगा का जल देना, यह मेरे लिए कठिन कार्य है। क्योंकि जब गंगा जी वेग के साथ पृथ्वी पर अवतरित होंगी तो उनके वेग को पृथ्वी संभाल नहीं सकेगी।
ब्रह्मा जी आगे बोले, "यदि गंगा के वेग को संभालने की किसी में क्षमता है तो वह हैं केवल महादेव जी। इसीलिए तुम्हें पहले भगवान शिव को प्रसन्न करना होगा।" यह बोल ब्रह्मा जी वापस ब्रह्म लोक की ओर प्रस्थान कर गए। उनके जाते ही अगले एक वर्ष तक भगीरथ ने पैर के अंगूठे के सहारे खड़े होकर महादेव जी की तपस्या की। इस दौरान उन्होंने वायु के अलावा अन्य किसी भी चीज़ का ग्रहण नहीं किया।
उनकी इस कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव जी ने उन्हें दर्शन दिए और बोले, "हे परम भक्त! तुम्हारी भक्ति से मैं बेहद प्रसन्न हुआ। मैं अवश्य तुम्हारी मनोकामना को पूरा करूंगा, जिसके लिए मैं अपने मस्तक पर गंगा जी को धारण करूँगा।" इतना कहकर भगवान शिव वापस अपने लोक चले गए। यह सूचना जब गंगा जी तक पहुंची तो वह चिंतित हो गई, क्योंकि वह सुरलोक छोड़ कहीं जाना नहीं चाहती थीं।
उन्होंने योजना बनाई कि वह अपने प्रचण्ड वेग से शिव जी को बहा कर पाताल लोक ले जाएंगी। परिणामस्वरूप गंगा जी भयानक वेग से शिव जी के सिर पर अवतरित हुईं लेकिन शिव जी गंगा की मंशा को समझ चुके थे। गंगा को अपने साथ बांधे रखने के लिए महादेव जी ने गंगा धाराओं को अपनी जटाओं में धीरे-धीरे बांधना शुरू कर दिया। अब गंगा जी इन जटाओं से बाहर निकलने में असमर्थ थीं। गंगा जी को इस प्रकार शिव जी की जटाओं में विलीन होते देख भगीरथ ने फिर शंकर जी की तपस्या की।

भगीरथ के इस तपस्या से शिव जी फिर से प्रसन्न हुए और आखिरकार गंगा जी को हिमालय पर्वत पर स्थित बिन्दुसर में छोड़ दिया। छूटते ही गंगा जी सात धाराओं में बंट गईं। इन धाराओं में से पहली तीन धाराएं ह्लादिनी, पावनी और नलिनी पूर्व की ओर प्रवाहित हुईं। अन्य तीन सुचक्षु, सीता और सिन्धु धाराएं पश्चिम की ओर बहीं और आखिरी एवं सातवीं धारा महाराज भगीरथ के पीछे-पीछे चल पड़ी। महाराज जहां भी जाते वह धारा उनका पीछा करती।
एक दिन गलती से चलते-चलते गंगा जी उस स्थान पर पहुंचीं जहां ऋषि जह्नु यज्ञ कर रहे थे। गंगा जी बहते हुए अनजाने में उनके यज्ञ की सारी सामग्री को अपने साथ बहाकर ले गईं, जिस पर ऋषि को बहुत क्रोध आया और उन्होंने क्रुद्ध होकर गंगा का सारा जल पी लिया। यह देख कर समस्त ऋषि मुनियों को बड़ा विस्मय हुआ और वे गंगा जी को मुक्त करने के लिये उनकी स्तुति करने लगे।
अंत में ऋषि जह्नु ने अपने कानों से गंगा जी को बहा दिया और उसे अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार कर लिया। तब से गंगा जी का नाम जाह्नवी भी पड़ा। इसके पश्चात् वे भगीरथ के पीछे चलते-चलते उस स्थान पर पहुंचीं, जहां उसके चाचाओं की राख पड़ी थी। उस राख का गंगा के पवित्र जल से मिलन होते ही सगर के सभी पुत्रों की आत्मा स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर गई। इस स्थान पर आज भी गंगासागर मेला लगता है।

<u>पतित-पावनी गंगा</u>

गंगा को पतित-पावनी कहा गया है। गीता से लेकर पुराणों तक में इसकी चर्चा मिलती है। वहीं शंकराचार्य से लेकर मुस्लिम कवि रहीम और तानसेन तक ने गंगा की महिमा का बखान किया है।
गीता में श्री कृष्ण ने कहा है- 'धाराओं में, नदियों में मैं गंगा हूँ।' ऋग्वेद के दशम मण्डल के प्रसिद्ध नदी सूक्त (75-5) में जिन 20 नदियों के नामों का उल्लेख है, उनमें गंगा सर्वप्रथम है। शतपथ एवं ऐतरेय ब्राह्मणों में भी गंगा का उल्लेख है। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में गंगाअवतरण का विस्तृत विवरण है। महाभारत के अरण्यपर्व के अध्याय 85 में गंगा की प्रशस्ति में अनेक श्लोक हैं। (88-97) वहीं महाभारत के अनुशासन पर्व में भी गंगा के माहात्म्य का विशद् वर्णन है। इतना ही नहीं, प्राय: सभी पुराणों में गंगाअवतरण की कथा तथा गंगाजल की महिमा की व्याख्या की गई है। विष्णु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, मत्स्य पुराण, वराह पुराण, पद्य पुराण, कर्म पुराण, गरुड़ एवं भागवत पुराण प्रमुख हैं।
स्मृतियों में भी गंगा का माहात्म्य वर्णित है। मनुस्मृति में साक्षी के सत्योच्चारण के क्रम में "माँ गंगा माँ कुरुन् गम:" (8/92) कहा गया है। वहीं गीत-गोविन्द के रचयिता जयदेव ने दशावतार वर्णन में भी गंगा की उत्पत्ति का संकेत करते हुए लिखा है कि वामनाअवतार विष्णु भगवान के चरण-नख से निकली हुई भगवती गंगा के प्रवाह से सम्पूर्ण धरा-धाम पवित्र है।

पदन खनीर जनित जन पावन
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे।।

महर्षि वाल्मीकि की रचना के रूप में प्रसिद्ध एक स्रोत 'गंगाष्टक' में कहा गया है कि 'भगवान विष्णु के चरणों से निकली हुई गंगा भगवान शंकर के मस्तक पर विचरती हुई हमें पवित्र करें।'
विष्णु से शिव तक गंगा की यात्रा में एक और पड़ाव पुराणों में माना गया है। विष्णु के चरणों से निकलकर वह ब्रह्मा के कमण्डल में समा जाती हैं, पुन: वहाँ से निकलती हुई शिव की जटा का आश्रय लेती हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण में ब्रह्मा द्वारा गंगाजल के धारण की कथा आई है। इसके प्रकृति खण्ड के 11वें अध्याय में कहा गया है:- चंद्रशेखर भगवान शिव की जटा में घूमती हुई गंगा पृथ्वी की ओर चली। शिव की जटा में गंगा के इस भ्रमण का वर्णन रावण कृत 'शिवताण्डवस्त्रोत' में मार्मिक रूप से हुआ है- 'यह महात्मा भागीरथ का अथक प्रयास था कि गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आई।'
श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध के नवम अध्याय में गंगाअवतरण का संक्षिप्त किन्तु समग्र वृतान्त उपलब्ध है, जिसके अनुसार कपिल मुनि के शाप से जब सगर के हजारों पुत्र भस्म हो गए, तब सगर की दूसरी पत्नी केशिनी से उत्पन्न पुत्र अंशुमान् यज्ञ के घोड़ा के अन्वेषण में निकले और कपिल मुनि के आश्रम में अपने पितृव्यों के भस्म देखे। कपिल मुनि को प्रसन्न कर उन्होंने उनके उद्धार का उपाय पूछा। तब उनके उपदेश से वे अश्व को लेकर राजधानी लौटे। सगर ने यज्ञ समाप्त किया और अंशुमान को राजा बना कर संन्यास ग्रहण किया। अंशुमान भी गंगावतरण के लिए तपस्या करते हुए दिवंगत हुए तब अंशुमान के पुत्र दिलीप भी आजीवन तप करते रहे। पुन: दिलीप के पुत्र भगीरथ ने गंगा की आराधना करते हुए घोर तपस्या की। तपस्यों से प्रसन्न होकर गंगा ने कहा कि मेरी धारा के वेग से पृथ्वी में छिद्र हो जाएगा और मैं सीधे पाताल लोक चली जाऊँगी। इस पर भगीरथ भगवान शंकर की आराधना करने लगे। प्रसन्न होकर शंकर ने गंगा के वेग को अपनी जटा पर धारण किया और बाद में गंगा धीरे-धीरे पृथ्वी पर भगीरथ के रथ के पीछे-पीछे चल पड़ी, जिससे गंगा का नाम 'भागीरथी' पड़ा। एक अन्य कथा के अनुसार इस रास्ते में महामुनि 'जह्नु' तपस्या कर रहे थे। उन्होंने गंगा के प्रवाह को उनका औद्धत्य समझ कर क्रोध से चुल्लू में उठाकर पी लिया। बाद में भगीरथ द्वारा वस्तुस्थिति प्रकट करने पर और स्तुति करने पर प्रसन्न होकर जह्नु ने अपनी जंघा चीड़कर गंगा को मुक्त किया, जिससे वह 'जाह्नवी' के नाम से विख्यात हुई। ब्रह्मवैवर्त-पुराण के कृष्णजन्म-खण्ड के 34वें अध्याय (20-22) में भी गंगा के विभिन्न नाम के साथ नामकरण के कारण की चर्चा की गई है।
गंगा भारत की नदियों में श्रेष्ठ मानी गई है। ऋग्वैदिक काल से आजतक इसकी महिमा गाई जाती रही है। गंगा के बारे में यहाँ तक कहा गया है कि गंगा के जल को स्पर्श करने वाली वायु के स्पर्श से भी सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। (ब्रह्मवैवर्त. प्रकृति खण्ड : 10/20)
शंकराचार्य ने भी गंगा की स्तुति करते हुए कहा कि 'हे गंगे! तुम्हारे जल में कछुआ या मछली बनकर रहना अथवा तुम्हारे तट पर क्षुद्र जीव गिरगिट बन कर रहना मुझे पसन्द है किन्तु तुम्हारे तट से दूर कुलीन राजा बनकर भी रहना मुझे अच्छा नहीं लगता।'
इतना ही नहीं सत्रहवीं सदी में पण्डितराज जगन्नाथ ने भी गंगा के प्रति अपनी भक्ति-भावना प्रदर्शित करते हुए 'पीयूष-लहरी' नामक काव्य का प्रणयन किया, जिसके मंगलाचरण में ही उसे पृथ्वी की सौभाग्यरेखा, महादेव का ऐश्वर्य, वेदों का सार सर्वस्व, देवताओं का मूर्तिमान पुण्य तथा अमृत-सहोदर माना है।
गंगा की महिमा संस्कृत साहित्य में ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारतीय भाषा के काव्यों की परम्परा में भी विभिन्न कवियों ने गाई है। विद्यापति की भावना तो माता गंगा के साथ इतनी अद्वैतमयी हो जाती है कि गंगाा स्नान के समय अपने चरणों से गंगा के स्पर्श पर उन्हें अपराध बोध होता है और वे कह उठते हैं- 'एक अपराध छमब मोर जानि परसल माय पाय तुअ पानि।।' इतना ही नहीं तानसेन, रहीम आदि मुस्लिम कवियों ने भी गंगा की भाव- भीनी स्तुति की है। रहीम कहते हैं-

अच्युत चरन तरंगिनी शिव सिर मालति माल।
हरि न बनायो सुरसरी की जो इंदव भाल।।

वहीं तानसेन कहते हैं-
ईस सीस मध विराजत त्रई पावन किए
जीव जन्तु खग मृग सुर नर मुनि मानी।
तानसेन प्रभु तेरो अस्तुत करता दाता
भक्त जनन की मुक्ति की बरदानी।।

धर्मशास्त्र की परम्परा में भी गंगाजल को अत्यन्त पवित्र मानकर उसे सदापुण्या कहा गया है और श्रावण एवं भाद्रपद के दिनों अन्य नदियों को रजस्वला मानकर स्नान करने का निषेध किया गया है, लेकिन वहाँ यमुना, गोदावरी आदि नदियों के साथ गंगा को भी पवित्र माना गया है। गंगा पर अनेक धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ पृथक् रूप से लिखे गए हैं, जिनमें विद्यापति कृत गंगा-भक्ति तरंगिणी एवं वर्द्धमान उपाध्याय कृत 'गंगाकृत्यविवेक' महत्त्वपूर्ण हैं। इन शास्त्रकारों ने एक व्यवस्था दी है कि गंगा के जल में अन्य जल को मिश्रित करना पाप है; अर्थात

गंगाजल को दूषित करना पाप का कारण माना गया है। इसके विपरीत यदि सामान्य जल में थोड़ा सा भी गंगाजल मिला दिया जाए तो वह सम्पूर्ण जल पवित्र हो जाता है। गंगाजल को 'परमौषधि' कहा गया है- 'औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणों हरि:।

<u>गंगा जैसी मां और कहां</u>
<u>(एक आलेख फेसबुक से उद्धृत)</u>

गंगा के किनारे में तुलसी का रामचरित, आदिगुरु शंकराचार्य का गंगाष्टक और पांच श्लोकों में लिखा जीवन सार - मनीषा पंचगम, जगन्नाथ की गंगालहरी, कर्नाटक संगीत के स्थापना पुरुष मुत्तुस्वामी दीक्षित का राग झंझूती, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, टैगोर की गीतांजलि और प्रेमचंद्र के भीतर छिपकर बैठे उपन्यास सम्राट ने जन्म लिया। शहनाई सम्राट उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की शहनाई की तान यहीं परवान चढ़ी। आचार्य वाग्भट्ट ने गंगा के किनारे बैठकर ही एक हकीम से तालीम पाई और आयुर्वेद की 12 शाखाओं के विकास किया।नवरात्र! यद्यपि ये नौ दिन आदि मातृशक्तियों की पूजन की रातों को अपने साथ लेकर आते हैं और मां गंगा आदि शक्ति नहीं है; यह बाद में धरती पर अवतरित हुई; फिर भी मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जैसी मां गंगा है, वैसी दुनिया में कोई और नहीं। यह दुनिया की एकमात्र ऐसी मां है, जिसे धरा पर उतारकर एक इंसान ने स्वयं को उसकी संतान कहलाने योग्य साबित किया। भारत में भी ऐसी कोई दूसरी नदी या मां हो तो बताइए? मैं अक्सर सोचा करता हूं कि आखिर गंगा के ममत्व में कोई तो बात है, कि कांवरिये गंगा को अपने कंधों पर सवार कर वहां भी ले जाते हैं, जहां गंगा का कोई प्रवाह नहीं जाता। आप पूछ सकते हैं कि आखिर इस मां में ऐसा क्या है कि गंगा अनशनरत प्रो. जी.डी. अग्रवाल जैसा आई. आइ. टी., कानपुर का प्रोफेसर... विज्ञानी भी कह रहा है- "गंगा मेरी मां है। मां के प्राणों की कीमत पर मैं अपनी प्राणरक्षा नहीं करना चाहता।" मेरे गांव का रमाकांत जब बेचैन होता है या उसे अपनी किसी समस्या का समाधान सुझाए नहीं सूझता, वह अपनी मां के पास नहीं जाता। वह उस मां के पास जाता है, जिसे उसकी मां भी मां कहती है - गंगा मां! वह कहता है कि गंगा के प्रथम स्पर्श के साथ ही वह शांत होने लगता है; उसकी बेचैनी मिट जाती है। कहता है कि गंगा मां ने उसे कभी अनुत्तरित नहीं लौटाया।
ये इस 21वीं सदी के दूसरे दशक के लौकिक जगत के सच्चे अनुभव हैं। "मैं तोहका सुमिरौं गंगा माई.." और "गंगा मैया तोहका पियरी चढ़इबै.." जैसे गीत गंगा के मातृत्व के प्रति लोकास्था के गवाह हैं ही। "अल्लाह मोरे अइहैं, मुहम्मद मोरे अइहैं। आगे गंगा थामली, यमुना हिलोरे लेयं। बीच मा खड़ी बीवी फातिमा, उम्मत बलैया लेय.......दूल्हा बने रसूल।" -इन पंक्तियों को पढ़कर भला कौन नकार सकता है कि गंगा के ममत्व का महत्व सिर्फ हिंदुओं के लिए नहीं, समूचे हिंदुस्तान के लिए है। गंगा का एक परिचय वराह पुराण में उल्लिखित शिव की उपपत्नी और स्कन्द कार्तिकेय की माता के रूप में है। दूसरा परिचय राजा शान्तनु की पत्नी और एक ऐसी मां के रूप में है, जिसने पूर्व कर्मों के कारण शापित अपने पुत्रों को तारने के लिए आठ में सात को जन्म देने के बाद तुरंत खुद ही मार दिया। पिता राजा शान्तनु के मोह और पूर्व जन्म के शाप के कारण जीवित बचे आठवें पुत्र को आज हम गंगादत्त, गांगेय, देवव्रत, भीष्म के नाम से जानते हैं।
वाल्मीकि कृत गंगाष्टम, स्कन्दपुराण, विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण, अग्नि पुराण, भागवत पुराण, वेद, गंगा स्तुति, गंगा चालीसा, गंगा आरती और रामचरितमानस से लेकर जगन्नाथ की गँगालहरी तक.... मैने जहां भी खंगाला, गंगा का उल्लेख उन्हीं गुणों के साथ मिला, वे सिर्फ एक मां में ही संभव है, किसी अन्य में नहीं। त्याग और ममत्व! सिर्फ देना ही देना, लेने की कोई अपेक्षा नहीं। शायद इसीलिए मां को सबसे तीर्थों में सबसे बड़ा तीर्थ कहा गया है और गंगा को भी। संत रैदास, रामानुज, वल्लभाचार्य, रामानन्द, चैतन्य महाप्रभु.. सभी ने गंगा के मातृस्वरूप को ही प्रथम मान महिमागान गाये। महाबलीपुरम्, अमरावती, उदयगिरि, देवगढ़, भीतरगांव, दहपरबतिया, पहाड़पुर, जागेश्वर, बोधगया, हुगली, महानद से लेकर भेड़ाघाट के चौंसठ योगिनी मंदिर आदि कितने ही स्थानों में गया। इनमें स्थापित गुप्तकालीन, शुंगकालीन, पालकालीन और पूर्व मध्यकालीन इतिहास प्रतिमाओं में कितनी ही प्रतिमायें गंगा की पाईं। कहीं यक्षिणी, तो कहीं देवी प्रतिमा के रूप में स्थापित इन गंगा मूर्तियों में मातृत्व भाव ही परिलक्षित होता है। कोई और भाव जगता ही नहीं।
इसी विश्वास को लेकर वर्ष - 2011 में मैने सोचा कि गंगा के मातृत्व को संवैधानिक दर्जा मिलना चाहिए; तभी गंगा का मातृत्व सुरक्षित रह सकेगा; तभी हम संतानों को गंगा के साथ मां जैसे व्यवहार के लिए बाध्य कर सकेंगे। जब मैने पहली बार यह मांग दिल्ली की एक बैठक में रखी, तो सरकारी अमले के नकारने से पहले एक छात्र ने ही इसे नकार दिया। मैं अवाक रह गया। मुझसे कुछ उत्तर देते न बना। उसने कहा - "गंगा में ऐसा क्या है? मांग का समर्थन करना तो दूर, मुझे तो इसे मां कहने में भी शर्म आएगी।" फिर मैंने यही सवाल मुंबई में दादा की एक पोती से पूछा। वह गंगा माई को उसके घर में काम करने वाली महरी समझ बैठी। मैं सन्न रह गया। ऐसे एक क्यूं ने मेरे मन में सैकड़ों क्यूं खड़े कर दिए। मेरे लिए यह जानना, समझना और समझाना जरूरी हो गया कि मेरी संतानें गंगा को मां क्यूं कहे।
तर्क मिले। लहलहाते खेत, माल से लदे जहाज़ और मेले ही नहीं, बुद्ध-महावीर के विहार, अशोक-अकबर-हर्ष जैसे सम्राटों के गौरव पल.. तुलसी-कबीर-नानक की गुरुवाणी भी इसी गंगा की गोद में पुष्पित-पल्लवित हुई है। इसी गंगा के किनारे में तुलसी का रामचरित, आदिगुरु शंकराचार्य का गंगाष्टक और पांच श्लोकों में लिखा जीवन सार - मनीषा पंचगम, जगन्नाथ की गंगालहरी, कर्नाटक संगीत के स्थापना पुरुष मुत्तुस्वामी दीक्षित का राग झंझूती, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, टैगोर की गीतांजलि और प्रेमचंद्र के भीतर छिपकर बैठे उपन्यास सम्राट ने जन्म लिया। शहनाई सम्राट उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की शहनाई की तान यहीं परवान चढ़ी। आचार्य वाग्भट्ट ने गंगा के किनारे बैठकर ही एक हकीम से तालीम पाई और आयुर्वेद की 12 शाखाओं के विकास किया। कौन नहीं जानता कि नरोरा के राजघाट पर महर्षि दयानन्द के चिन्तन ने समाज को एक नूतन आलोक दिया! नालन्दा, तक्षशिला, काशी, प्रयाग - अतीत के सिरमौर रहे चारों शिक्षा केन्द्र गंगामृत पीकर ही लंबे समय तक गौरवशाली बने रह सके। आर्यभारत के जमाने में आर्थिक और कालांतर में जैन तथा बौद्ध दोनो आस्थाओं के विकास का मुख्य केन्द्र रहा पाटलिपुत्र! भारतवर्ष के अतीत से लेकर वर्तमान तक एक ऐसा राष्ट्रीय आंदोलन नहीं, जिसे गंगा ने सिंचित न किया हो। भारत विभाजन का अगाध कष्ट समेटने महात्मा गांधी भी हुगली के नूतन नामकरण वाली मां गंगा-सागर संगम पर ही गए- नोआखाली!
लेकिन भारत के लिए गंगा के ये सभी योगदान उस नौजवान और दादा की उस पोती के सवाल के उत्तर के रूप में मुझे संतुष्ट नहीं कर सके। असल उत्तर मुझे अतीत के पन्नों में ही मिला-

"यथा माता स्वयं जन्म मलशौच च कारयेत्।
कोडीकृत्य तथा तेषां गंगाप्रक्षालयेन्मलम।"
अर्थात जिस प्रकार से माता स्वयं बच्चे को जन्म देती है; उसके मल-मूत्र को साफ करती है; उसे गोदी में बिठाती है, उसी प्रकार गंगा भी.. मनुष्य कैसा भी नीच या पापी क्यों न हो, उसके मल-मैल को प्रक्षालित कर उसे पवित्र बना देती है। पद्मपुराण के इस श्लोक की तरह गंगालहरी भी गंगा को एक ऐसी मां के रूप में उल्लिखित करती है, जो ऐसे कुपूत को भी देखना चाहती है, जो कुत्ते की वृति धारण किए है; झूठ बोलता है; बुरी-बुरी कल्पनायें करता है; दूसरे की बुराई में संलग्न है और जिसका मुख कोई दूसरा देखना नहीं चाहता "श्ववृक्रिव्यासंगोनियतमथ मिथ्याप्रलपनं.....नृते त्वत्को नामक्षणि मपि निरीक्षेत वदनम्।"

इन दो उत्तरों को आज हम सच होते देख रहे हैं। आज हम गंगा को मां कहते जरूर हैं, लेकिन हमारा व्यवहार एक संतान की तरह नहीं है। गरीब से गरीब आदमी आज भी अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा खर्च कर गंगा दर्शन को आता है,लेकिन गंगा का रुदन और कष्ट हमें दिखाई नहीं देता। हमारे कान गंगा का रुदन सुनने में असमर्थ ही रहते हैं। गंगा के साथ मां का हमारा संबोधन झूठा है। हर हर गंगे! की तान दिखावटी है। प्राणविहीन!

दरअसल हमने गंगा को अपनी मां नहीं, अपनी लालच की पूर्ति का साधन समझ लिया है; भोग का एक भौतिक सामान मात्र! मां को कूड़ादान मानकर हम मां के गर्भ में अपना मल-मूत्र-कचरा-विष सब कुछ डाल रहे हैं। अपने लालच के लिए हम मां को कैद करने से भी नहीं चूक रहे। हम उसकी गति को बांध रहे हैं। मां के सीने पर बस्तियां बसा रहे हैं। अपने लालच के लिए हम मां गंगा के गंगत्व को नष्ट करने पर उतारू हैं। हम भूल गए हैं कि एक संतान को मां से उतना ही लेने का हक है, जितना एक शिशु को अपने जीवन के लिए मां के स्तनों से दुग्धपान। हम यह भी भूल गए हैं कि मां से संतान का संबंध लाड, दुलार, स्नेह, सत्कार और संवेदनशील व्यवहार का होता है, व्यापार का नहीं। हमें गंगा मिलन के मेले याद हैं; स्नान और दीपदान याद हैं, लेकिन हम इन आयोजनों के मूल मंतव्य और गंगा अंतर्संबंध को भूल गए हैं।

जानबूझ कर की जा रही हमारी इन तमाम गलतियों के कारण मां गंगा गुस्साती जरूर है, लेकिन वह आज भी भारत के 37 प्रतिशत आबादी का प्राणाधार बनी हुई है। आज भी मां गंगा भारत की कुल सिंचित भूमि के 47 प्रतिशत खेतों को पानी पिलाकर जिंदा रखती है। आज भी गंगा भारत के पानी और पर्यावरण का मॉनीटर बनी हुई है। गंगा एक ऐसी मां है, जो खुद पर हो रहे तमाम अत्याचारों के बावजूद मृत्यु पूर्व दो बूंद स्तनपान की हमारी कामना की पूर्ति करने के लिए आज भी प्रस्तुत है। दुनिया में नदियां बहुत हैं और मां भी बहुत। लेकिन गंगा जैसी कोई नहीं। क्या हम यह भूल जाएं? क्या ऐसी मां के मातृत्व की रक्षा हमारा दायित्व नहीं? क्या ऐसी मां को आज हम मां मानने से इंकार कर दें? क्या उस नौजवान और दादा की उस पोती के लिए इस पर कोई बहस संभव है? लेकिन जो बहस संभव है, उसे मैं उसी सवाल के रूप में आज आपके सामने रख रहा हूं, जो मां गंगा ने अपने अवतरण से पूर्व भगीरथ से पूछा था - “मैं इस कारण भी पृथ्वी पर नहीं जाऊंगी कि लोग मुझमें अपने पाप धोयेंगे। हे पुत्र! बताओ, तब मैं अपने पाप धोने कहां जाऊंगी?” सोचिए और मुझे भी बताइए। हो सकता है कि मैं आपका संदेशा मां गंगा तक पहुंचा सकूं।